

2.626



आश्विन संवत् १९५६

2.626

ASHA ARCHIVE

दि.वि

९

ॐ नमो श्रीवक्रसत्वाया ॥ गुरुपूजाविधिमाह ॥ पादोसूर्यार्घ्य ॥ गुरुमंडल
पङ्कगाव्या ॥ अधर्नासिधूनस्थापना ॥ आदियूक्त ॥ देवप्रतिपादयूजा ॥ अंकनसो
धना ॥ आदिआहक ॥ मंडल
किपूजादेवतापूजाविधिव
नमंडलदनक ॥ अध्यापय ॥ आदिस्थानकासंहायकाजलयं चान ॥ स्वकना ॥ मि
॥ अध्यापयाम्यहं नाथत्वं ममात्मा महाविहसत्त्वात्संस्तानसागनाइद्र्यवद्रत्वं प्रति

उवः

९

स्थापनाय ॥ श्रीहनुकस्यचतुर्थारिषकायमंडलं प्रवर्त्तनं वाहामन्वाकनिष्पामियुष्
माहिर्यकार्यकनधीयंत्तुर्कृत्यम् ॥ १ ॥ ॥ हगुरुहनाथजिमिसासाच्छलपा
लशूल ॥ संस्ताननूपिसमदइ
विष्णुक्तच्छलपालश्रीका
चापिंथकयामहायानच्छस्यविष्णुहहगुरुहनाथजिमिरमहायानच्छयक ॥ श्रीह
नुकयामंडलदयकमास्तानं अथवाहामयामास्तानंगुविधिदयकमालगुगु

दि. वि.
२

क्रियाया यमाल उग्र विधेय का क्रियाया नामहायानत इच्छया था हन
कया चतुर्थ हिष कवि विष्वाहृधक गुन क विनियाना ॥१॥ **गुन क कि न**
न ॥ निष्प ताव ता स्वा न **य मा या ने ॥ ताव ता ॥ कं ता हि न्य स न**
विम धु ल स्तं हं का न कि न **। हो हृ द्र न हं का ना डु कं कृ षं वि कृ न**
नूपे न ग्रं ल म्ब हृ ष ष उ द्र क ग यि तो नू व स्या पं ता गि का त्य ध ति श्र म र्थ न च र हं
का न हृ दि ती त्वा प नि श म्प य ऊ मा न व ड हं का न म हा क्रा धं वि हा व्य ॥ **गं र व ल**

गुनः
२

ख न हा य ॥ **ॐ हृ कृ ति स कृ हं २ रु द् ॥ ॐ हृ कृ २ हं रु द् ॥ ॐ हृ कृ २ हं रु द् ॥**
ॐ आ न य हा ॥ **रु ग व न् वि द्या बा ज हं** **अ क स्य स र्व पा पा न ना भ य २ हं रु द् स्वा हा**
म ठ ल वि र्ज न या न क ॥ पं **च ग व्य वि य पा या दि ती नां कृ त ला**
हा ग्नि न क्रा न त्र मं ठ ल वा **य क प्र हा पा य ने ॥ पू जा ॥ न त्र म ठ र**
ल या र व क त ॥ धृ न का ॐ मं ठ ल दा ह ल य ॥ वा क्य ॥ च रु न त्र म्प दि ॥ गु न प्र
हृ पा य स्त पा लि स अ र्थ या च क ॥ हा इ इ अ कृ न चं ल ना य दा हा स्वां तं

द्वि
४

२ पृथगि अमृकनक २ स्वाहा ॥ ओं गवः शुभाहं फट् ॥ सिरु नं लय वज्रं सिल
गधिया ॥ ओं सुप्रति स्थित वज्र स्वाहा ॥ वज्र स्वाहा ॥ कल भलं खन हाय ॥
चाक्र पञ्चा ॥ मण्डल धिल कसक स्यत किन न कं मुनि सता
कनक मापत सगवन कय भाहति च्छय चिह्न पूजा दगुली स
मय काय ॥ आच्छ सल हिय सनया चक्र विस्तर्जत वलि च्छय ॥ पूजा स ॥
गीत ॥ मध्म मन् ॥ अतिल ॥ नक्त वरु ॥ तमाहं ॥ द्विचक्र ॥ आच्छ स ॥ गीत

उन्
४

हाशरु नक्ष ॥ ॥ ॐ निमिष संग्रह नृपूजा विधि ॥ ॥ गद्य चक्र सगीत
मन्वाले ॥ धूमांग मनी मन्वाले ॥ निमिष पत्रिका स्वय ॥ प्रथमं गन्मसा वाधनं दि
तीयं सलोपकान संरुनी यं निमिष लं चतुर्थं सहस्रं वं चमं जा
दिकर्म सद्यं स मयं चमि का ॥ धनं मन्म धल लय क निमिष या
पत्रिका स्वया अचतुर्थं हिषक विथ शला ॥ ॥ ॐ निग्न नृपूजा विधि ॥
ओं तमः लोकनाथाय ॥ ॥ अष्टमिद्वर विधि माह ॥ सूर्याद्य पूजारा सुसक

शुभः
५

[illegible]

दि.वि

३

आर्यहोषकनाजाय०॥१॥ पंचायहानयूजा॥ वलि॥ ॐ नमः अमाय
पाशयहोलाकदर्यभयमहाकान्भयचिन्तायसकलनागदाभिदइः
एवइसहइष्टमूपसनाय ॥ १॥ वलिङ्गुधदितहिनायगृही
नायउंऊंऊं॥ नकिपूछिम ॥ नक्राकूऊं॥ अ॥ १॥ डीरुदस्याहा
मुनि॥ लाकध्वनितं॥ नक्राअमायगलभगवअमिनाराकिनेमौलिन
मामिअमायपातितं॥ डी॥ कानसम्हानाथकनू॥ लिधमानं॥ अमायपा

उ॥ ३

ननामानंलाकनाथंनमामिहं॥ १॥ मध्यवृद्धमल्लिचिकंनय॥ वाक्॥ स
र्वनाथगनासां सर्वनाथगनालयं सर्वधर्मायनेमात्मादिनामल्लमरुमं॥ २॥
वृद्धमल्लस्वानवाय॥ ३॥ ॐ वृ ॥ अमल्लसर्वविघ्नान्छनयहं॥ स्वा
नउयक॥ ४॥ ॐ वेनाचनायव ॥ जपूष्यं प्रकिच्छाहा॥ म॥ ५॥ ॐ अ॥ कौ
स्यायवज॥ ६॥ ॐ नत्सहवाय॥ ७॥ ॐ अमिनाराय॥ ८॥ ॐ अमाय
सिद्धि॥ ९॥ ॐ नामकीय॥ १०॥ अ॥ ॐ नाचनीय॥ ११॥ ॐ यमनीय॥ वा॥

दि. वि.
१

ॐ नमो नार्थे ॥ ४६ ॥ पंचापहानयूजा ॥ बलि ॥ ॐ नमो व्रायक नृत्त हानह
निकृष्ट हृदयाय पनात्मा समचिन्ताय उधुके क मूर्य सत्त्वार्थ महाइः ख
कनकादि ॥ ४७ ॥ दम्बलिदि व्यगन्धन सापन मयं कुंज मां सर्व सत्त्वा
नां प्रान्न नृत्तायाः सम्यक् वा ॥ धो प्रकि स्थपनाय आः ॥ गवज
वज्र कुष्महा ॥ हं स्वाहा ॥ मुनि ॥ नृत्ता किं क म स वि कल्प मि न सं प्र द व चं च
लूलं काम का ध वि धं वि द र्क द र्ग नं नाग प्र च भ्रं क र्ग मा हा स स्व गी न र

७२४
१

साहं म्या ॥ हलिष्पिं किं नं थ थिं क व द्र या मं ड ल द य का च्छ मि द र्ग त वि या आ ॥ थो
या दि नं ति स्थं ॥ ग म ला न वा धि म लु ल ख ड म क ल ड ला नं थ थिं क व द्र या ग न न ड
ध क गु न नं आ ह द य का वि द्वा न ॥ १ ॥

का क न स थं चि ह्ना न गं दा
मि ति वा न व द्रा य न र्त्ते न मः
दर्शिता म्य य ० ॥ मं दि व स म्पा दा य या व दा वा धि म लु ति ष लु ना न् ॥ १ ॥

न नं प्र ह्ना म लु व ल न यः स
२ ॥ ग ॥ सा हं नु व ना मा लु वं
दर्शिता म्य य ० ॥ मं दि व स म्पा दा य या व दा वा धि म लु ति ष लु ना न् ॥ १ ॥

हनिष्यपिं वृद्धशयुगधिं कृष्णसालगवान्धाकविष्कानाचां कृष्णकृष्णवंगश
याविष्कानाचा कृष्णसालिंदका कनाविष्का कृष्णदका मज्जयात्ययुकावि
ष्का कृष्णथयिं कृष्णवृद्धसुन नरुधकगुनरीप्ताहृदयकल ॥ २ ॥

पुद्धरुगवकं महाका नृत्तिकं सर्वहं सर्वदर्शिनं
सर्ववेनरुयातिनं ॥ १ ॥ नमस्तु २ रुत्पा०

गुन ४
८

महायुनृष्यादि ॥ मि ॥ हनाथहगुनृवृद्धधया कृष्णधं कृष्णपुनृष्यव ॥ कृ
कां कृष्णमज्जुगुमविर्शयाविष्कानाचां कृष्ण ॥ मन्त्रव्यलाकदका स्यात्प्रवृद्ध
याविष्कानाचां थयिं कृष्ण वृद्धया मज्जतातधकगुनृयाक
प्रार्थनायाता ॥ २ ॥ न माह ॥
॥ मि ॥ महायुनृष्यज्जुगुयकायं ज्जुनृनकायं वृद्धमज्ज
गच्छामिदिप्रादातामयं ॥ २ ॥

३ कृ

[illegible]

७५४
५

विष्णुनाय०॥ वा॥ ॐ आर्यसूक्तप्रदाय०॥ ॐ॥ पंचापचानपूजा॥ वलि॥
 ॐ अष्टापात्रमितायमहापीठमहा॥ वनामहानीलनलपंकजपूष्पहस्त०॥
 वलिपंचामरंरुजंजिषपि चूषणवर्द्धनिदालःमधवर्द्धनिधिनि
 श्वर्द्धिवर्द्धनिस्वाहा॥ रुनि॥ भायास्यादिकइःखगसमहंरुचक्रव्य
 नप्रातिनायकधनुकयंजनादहनहस्तत्वान्तमाकर्षणि॥ अष्टानाचक्रगत
 मन्त्रनक्तिहय० हस्त० गइ० खर्द्धवांसंवृद्धाष्टपुनः॥ अष्टनायमहंरुधर्मायनस्मेन

दि. वि.
९०

साहिष्यादि॥१॥ हसिष्यापिंजितथधिंक्रधर्मयामलुलदयकाचिमिगदर्शन
विया. आरथेयादिनंतिहंरगमलाकवाधिमलुलखंउमकलउलानलंधधिं
क्रधर्मयासननक्रधकग वृक्षंआह्लादयकल॥२॥

मः॥१॥ साहंनुवनामातुवदमिनास्ययंमंदिवसम्
पादाययावदावाधिमलुतिखलुनान्॥३॥

उनु४
९०

धर्मग्यादि॥१॥ हगुबृहताथधर्मधयाक्रुधं.ख. बागद्वयमाहमायाका
ताश्वेष्टक्रयविष्क्रुधंथिंक्रधर्मप्रह्लापानमितायासमसउतधकगु
याकचिपिंनिष्यपिसंप्रा र्थता॥तम३हं॥ ४॥

याना २

॥१॥ धर्मसमसंगछामिविजातामयं॥४॥ संयमलुलथिचकंगय
सर्वलक्रसंयूहःसर्वलक्रसर्वीकृतसमकहृदचिन्तायथायमलुलमम

दि. वि
११

उक्तं सप्तसंघमस्तुलः॥ उं संघमस्तुलं सर्वविघ्नान्त्सानयं॥ मस्तुल उच्यते॥ उं
आर्यावलाकिरुत्पनाय वक्रपुष्पं प्रकृच्छाह॥ म॥ उं आर्यमेधीयवज्र॥
पू॥ उं आर्यगगनगंजाय॥ द॥ उं आर्यसमकहद्राय॥ प॥ उं आ
र्यवज्रपाशाय॥ उ॥ उं आर्यमशुघाघाय॥ अ॥ उं आर्यसर्व
निवर्तुहि कंहित॥ ने॥ उं आर्यक्रान्तिगर्हाय॥ वा॥ उं आर्यखगर्हाय॥
॥ ॐ ॥ पंचापचानयूजा॥ वलि॥ उं नमो लोका नाथाय देवास्तु नमः यक्रुना

उमृ४
११

कसादिहि वंदिकपादपुत्रय अ॥ लघनाय कस्तुवा प्रनमः चिनामस्तु नायमहा
कान्तिकाय॥ ॐ दं वलि पंचामनादि सहि नगट्रं सर्वसत्वा प्रनमः कादिद्वः
खाइकानयः उद्रन २ समू द्रन २ वृद्रसम्यधर्मसमूह न संघसमूह न
समूवादि समूह न उं आ॥ कीहं कुरु स्वाहा॥ मुक्ति॥ चत्वाभिप
मृत्युन कारुवसुखसुखादिविद्विषयं त्वानं प्ररुलस्थिता समनना ॥ २
कामाहाया गिनः॥ ॐ न्यष्टीवनयंगलारुगवनाय सिंगलव्याकृता प्रहृ

दि.वि
१२

(नीलसमाधिरुद्रवपुषसंघायनस्मृतमः) साहसि ॥ ७ ॥ हसिष्यपिजितथथिं
कसंघयागमलुलदयकाच्छमिरुदर्शनवियाश्रय्यादितुंनिस्पृग्वलानसं
घमलुलखंडमश्लजाला कथथिंकसंघयासमृद्धधकगनृसी०५

नीलसमाधिरुद्रवपुषसंघायनस्मृतमः ॥ ७ ॥ साहंउवनामाउवं
दर्शिताम्रयः००मंदिवसमृपादाययावदाधिमभुतिखभुनान् ॥ ५ ॥

उनृ४
१२

अर्ववर्त्तिकमि ॥ हताथगनृसंघधयाकआर्यावलाकिरुद्रममहारुधंक
खदवगलदकास्यांशुदशयाविष्काकथथिंकअर्ववर्त्तिकवाधिसत्वसंघया
मनसुतानधकगनृयाकच्छ पिंसिष्यपिसंविक्तियान् ॥ ७ ॥

मि ॥ अर्ववर्त्तिकवाधिसत्वसंघसमनसंगाच्छमि
गलनामयं ॥ ७ ॥

दि. वि.

१३

समस्तमि॥ हृग्वृहनाथजिमिनकायासविष्णुधकचलपालयाकवि
नित्यानाहंतंरुिदिग्गसविष्णुनाचापिंरुधगगपिंक. हंतंमिहाहृमहासा
हृल्लोकधानुसविष्णुनाचां पिंरुधगगपिंक. वृद्धवाधिसुत्वपिंक.

मि॥ समन्वाहमनुमांदसदिग्लोकधानुसनिपकितावृद्धारुगवका
वाधिसुत्वा॥ अचार्योपाध्याया॥ अ॥ अहमवनामायत्किंकायवा

उन्म

१३

उन्मउपाध्यायपिंक. जिपिनिष्यपिसंप्रार्थनायाताचूयाकानसंधासाजिपिम
नृष्ययाजन्मकास्यनिस्यंजनमाहुंननीयानागुवचनयातागु. मरिनयातागु. ह
नंदकागगगवाधिसुपिंक यातागुहंतंमावीयाकयातागुपाप. ह
नंतीचजामीडासंमगमयाना गुपापथुगुजन्मसुयानागुपापम्यम्य
पिंक. जिंधयायाकागधनञ्ज कर्मयातागुपापदका॥ १॥

कमताहिः सर्ववृद्धवाधिसुत्वामातापिंकमो॥ रुदत्यांसंगम्य०००हृजन्मनि
हृवाकनमयापापकंकर्मकृककारिंकवारुवन्॥ १॥

दि. वि
१४

ममति॥ सकलं च गयाना गवडा चिना उलिगं कलना दका वृद्धा धिसुत्व
गुन उया ध्मा शपिति अगुना कधून किमिसे सिया गुलमना गुपाय दका स
कना नान धन॥ किमिसे
लपाल पिंशुल धक गुनूया
गुणया यि सं वनी विसं कन्पु सं च
कच पिंस कस्याने विनियान॥ ८॥

मि॥ मरुः सर्वम कपि भुयित्वा तुल्यित्वा सर्व वृद्धा धिसुत्वाना माचार्य
स्यानिक॥ अगया वनया प्रवनया प्रनिद सनया जान समन प्रनिद
गु॥ मि॥

गु१४
१४

समन्वति॥ हसिष्य पिं च पिंस कस्याने न काया यशुलगथ काया श्रया विष्ठा
पिंस महा कधना पूजा यायथा गपशया विष्ठा पिंस भगपि सं भला क जीवन व
हल पूजा ला न सं प्राप्ति
स्याय गुन समया न॥ ९॥

॥ १॥ समन्वा हने हद क ४ यथ म आर्या ह काया व की वं
प्राप्ति पापं प्रनि विनना॥ ९॥

दि.वि
१५

निहन्ति॥ हनिष्यपिंकथिआनामशुआनाप्रहानंमयानसुखप्राप्तिषनाल
क्राचायादयावकशयाविष्कान्कहंतसपानिच्छादिषजंऊनकपिंसकस्या
नंधर्मनकायाताविष्कान्
संचपिंमिष्यपिंसक
थाथचमिसनेयायमालधकशुन
स्यानंआहृदयकल॥ १०॥

॥७॥ निहन्तदभुनिहन्तगकुलक्रिकादयावकासर्वसुखप्राप्ति
हन्तवृज्जकगदूकगपिपीलिकामूपादाय॥ १०॥

उभू
१५

उवमनि॥ हगुब्रह्माथआकिमिसंथनियाथूगवलानिसंगवलनमाद्रिविता
सूर्यउदयमकुलजालांनंप्रातिपितिगशूकायगलीनसयायमशूक॥ ११॥

॥ मि॥ उवंमबाहूठमा
द्रिगमितीयावचसूर्योदयाननप्राप्तकिपाकंप्रहायप्राप्तकिपा
कान्प्रकिविनमामि॥ ११॥

दि. वि
१५

निहृदः ॥ हनं हृगुहनाथ कथिआना मक्रुजाना प्रहानथुं न संयायम
षुनः कवलसुत्वप्रातिघनालया वायकल दयावक्तुयकलधकं कनम
पिंसुपातिष्ठुं प्रादिप्राति पीदकां नक्रायकलधकसुनुयाक
चपिंसिष्यपिंसकस्यानं प्रार्थनायाम् ॥ १२ ॥

नि॥ निहृदः ॥ निहृदः मालिकिना दयावक्ता सर्वसुखप्राप्तीह
नयुं न सुकुरु सपिपीलिकामुपाशय ॥ १२ ॥

७४
१५

७४ ॥ हृगुहनाथ षुगकथं जिमिंसंक्रायां स्थानासुनीनं चक्रापाय
यायमषुनः क्रापा शिवक्रानाओं पिंसुगगनपिंसुगस्थविधिकर्मसुनकन
थं जिमिंसंयायकलधक उनुयाक प्रार्थनायाम् ॥ १३ ॥

॥ नि॥ स्वमवाहं प्रथमतां गतकथां मार्याभं महसिष्यामन
सिष्यजुनविधियन अतकनामि ॥ १३ ॥

दि.वि
११

पूतनकि॥ हसिष्यपिंहनंभवनामवृगधधाराप्रवृजयापूजायायजागपश
याविक्रपिंरुधगगपिंरुधलोतजीवनवहलपाविक्रकउलानंमवीकंभ
पितीगधनमकालवृक्त चर्यमवृगमनलहंनहसिष्यपिंरुस
खनंमह्नागजिवजं२ ००॥ आदिकायागमकानमतलहनं

॥७॥ पूनपनंसमन्वाहंरुहदकयधरुआर्याहकायावकि
वंजदलानंअवृक्तचर्यमघावादंसूनामनयमघप्रमादस्थनं

७४
११

प्याषंरुयगम्पहालगुस्वानमालानंकाषायगुनस्वाकवम्बुकंवल्लगुहनंह
सिष्यपिंधकज्वलसहागयायगुनंसंमयाकधकगुनंसंजौआहृदयकल

॥१४॥

नृप्यगीनंवादिनंमालागन्ध विलपनंवर्धकरुषसंधानसं
उच्चमयनंमहाभयनंअकालशरुनंअकालशरुनानुप्रतिविनना

॥१४॥

५॥ दिशि॥
॥१८॥

अनता॥ हनाथगुनचलपालंआहादयकाविष्मनाथंकिपिंस्तकस्या
नंधच्यानाहनिनंपापयायमयूनकापाश्यामथगनपिंसंनिष्पयाक
गर्थविधिकर्मयाकल
धकगुनयाकचपिं
आथंकिपिंस्तकस्यानयायकल
निष्पपिंसंप्रार्थनामाक॥१८॥

सि॥ अनताहप्रथमनागनरुधामार्थात्ममहनामिकाम
नमिधमनविधीयकअनूकनामि॥ १८॥

॥ गुन॥
॥१८॥

गुनूककिरुतकः अर्थयायनायकनसाइइअर्थसिचुल॥ वाहासा
नथलिनसंपगलिमलुलहायकवाकासकथ॥ वाक्॥ ओंमन२सिनि२
कम२पच२हम२हा२हि२
२कम२मम२वन२नसि
२प२रुवन्नामादिश्रयमवनूकववक्रंइकाविदवगासत्यमिचुचनसक
मलायअर्थप्रकिचुहाहा॥ ॥थनंलिब्रककाकांकाकय॥ मरु॥ ओं

गतिं कुरु धर्मगुरुः

दि. ३९

हृग्वृहनाथधुगशीलसम्बरध्यागुदातयानागुलिंलिपतत्तुगधगुरुकुरुयुंध
 सामहाकधनासम्बरध्यागुदातयानागुलिंलिपतत्तुगधगुरुकुरुयुंध
 याः लोकापिसंयागुदकासियाविद्याकुरुहंतपुरुषापिनीसानथिकुर्याद्व
 नापिनिमनुष्यपिनीसान्ना
 कुरुध्यागुरुकुरुयुंधक विंक्रियाना ९

॥ मि ॥ अतनाहंशीलसम्बरध्यागुदातयानागुलिंलिपतत्तुगधगुरुकुरुयुंध
 कः सम्बरध्यागुदातयानागुलिंलिपतत्तुगधगुरुकुरुयुंध
 सानथिः सान्नादिवनातांचमनुष्यानांचवृद्धाहगवान् ॥ १ ॥

गुनु ४
२९

६४ दं च हृग्वृहनाथध्यागुदातयानागुलिंलिपतत्तुगधगुरुकुरुयुंध
 सागचित्रवांलाकेतचित्रधुजुयेकेतयोगज्ञानलाकेतहंतसत्त्वप्राणिपिं
 दकोस्यातंमोक्षमवंपितंमोक्षेयातथागतयापदलाकेतधु
 गुपोधधधशीलसम्बरधर्म दानयानागुधकगुरुयाकेविंक्रियाना

॥ मि ॥ ६४ दं च ध्यागुदातयानागुलिंलिपतत्तुगधगुरुकुरुयुंध
 सानायायोगज्ञानायासर्वज्ञानामुक्तयवृद्धाहगवान् ॥ २ ॥

दि.वि
२२

विस्तृतं नयाचकसिद्धलं इला ॥ वृत्त ॥ शीलचंदनलिप्तागमध्वानपनावय
 लपुतावाध्वंगकसाकीर्तुविह्वनध्वयथासुख ॥ ॐ कृतावसर्वसुखार्थसि
 द्विंदत्वायथानृगभंगच्छ
 आ॥ ४॥ वृत्तमल्लं मू४
 च्छेद्यनकाकाय ॥ वृत्तकांष्ट्राकमल्लं आय ॥ पीथदीयूजा ॥ मल्लं
 थिलकिमनमुनि ॥ आभीर्वाद ॥ चक्रयूजा ॥ मूलयादकृत्तमिष्य

गुण २४
२२

यादकृष्णमास ॥ पंचायचामयूजा ॥ भनाकनऊकं ॥ सतिष्कृविस्तर्जन
याय ॥ ॥ धनंलिमिष्यपिंपालंयानकलच्छय ॥ गुन्यपतिअल्पेन
सुउहाउत ॥ अविवाह
य ॥ ॥ वृद्धिजमाघ
धिसम्पूर्णम् ॥ ॥ उहम् ॥

दिने
२२

ॐ नमः श्रीचक्रसम्बन्धनाय ॥ ॥ प्रतिमधुलकद्रुकलम २ गणकलभगव-
द्व ४ नाहापकलभगव १ नागधमंरुगुनक्रुंकिहिक्रुमूवकंयभककलस
लाकाहस्मनिसलाकूग लपाकसागभनूधगनचिक्रनूधग
नमकूदपदाहिधकपंचा कभंतउयकवलियाक १ नसंपंचग
व्यपाडनसंपमलाचार्यमाडाउपाध्मास्मनूगममल्लसमाधिकांलंथक
प ॥ मूलदेवतामलाचार्ययाउपाध्मादेवकूजमानदेवकसंपूजा ॥ ॥ लि

गुनू
२३

चास्यंगुनमंडलपंचगव्यसिक्कनय ॥ पाडयूजापंचाकू १ अदियूजा ॥ अ
किपादियूजाककलसाधन ॥ आदिसमयकाय ॥ नालपूजा ॥ मल्लथिल
किननसुताकूबनालका यकिगविय ॥ माडाप्रक ॥ नन्दिन
मस्कान ॥ नागमालाकाय ॥ गीक ॥ विश्वगनामूह ॥ आदिपनि
क्रमसंशला ॥ सम्पूर्णचक्रसंम्बन्धसमाधि ॥ कलभसगवतमंरुगणकल
१ आदिस्थपनायानकंपूजा ॥ धूनकाठामामकियूजा ॥ उपाध्मानंकि

दि. का
२४

नैसपूजा ॥ तावता ॥ ॐ मटिति सत्यमानकनं नं जागनविस्थ ४ हं ऊ ४ विभू ॥
स्थित ४ हं कानकि नं जाहलवजविस्नेति सध्वकनपीरुयवीऊकानवजपं
ऊलवजस नजालविमान मरध्वश्चकाल ५ ४ सहकालविभूक
लिममयीरुमिस्त्रिहाव्य ४ कतमध्यमटिति वजसलनूयनाकृष्य
उलाकविजयापननामावजहं कानविष्ठाऊसूर्यस्थरु नवकासीना आ.
लीराचननद्यक्रम्यकूधानंकल्यां माननवग्यमनी चिसंचय ४ कवल्यं

उनु ४
२४

निवतिरिलकगविप्राहंदातिनीलपीनहयिगमूलसर्वनव्यारुवकुडयो
डंष्ट्राककललजिक्काप्रनिमखं हं ऊ ४ कटिलनकवर्तु नडिनउषभूडालला
सुनव्याप्रवर्मा म्वनातिला नंरवलियिगार्जकालंकपिलकूकनरु
ककादितागनाजाकृगम उलावज २ यष्ठा न्विककनासां वज
मृष्टिदयं पृष्टलप्रंकतिष्टिकादयं रंखलिकं नकूतिदयं प्रहकमिनिर्हला
कमूडयाह्वाहप्रहासमायनः ॥ सवकनासां अंकपा ॥ गोवासासां कपा

दि. वि
२५

लखवांगदधनगर्जहं काममखनदिग्मखः स्वहृत्तनहं कामाखसुखनमि
हिः दशदिविद्यान्जाकृष्णहं कामसूत्रिदशदिग्ममर्पयन् ॥ आ. पा.
धू. निलांजनलाहानि न कामसूत्राननक्तचंदनप्रकानवल
नकापायाय ॥ पूजाया य ॥ वज्रमाय. जमसिहताकिनक्ष.
धिसंजाय ॥ मन्त्र ॥ हूं हूं ॥ यधर्मा ॥ सिद्धलय ॥ अकानेमख ॥ वलि
दानये ॥ मुनि ॥ गताजन ॥ ॥ थनउयाध्मादतावपूर्वनिहं किनक्षमाय

गुनु४
२५

॥ पूर्वकाकास्याहगवनिमाकर्षयन् ॥ ओं काकास्यघघघाटय २ सर्वइष्ट
वडासप्रनिवानान्कीलय २ हूं हूं ॥ पू ॥ उरु. नउलूकाध्माहगवनिमाक
र्षयन् ॥ उ ॥ पश्चिमधना ध्माहगवनिमाकर्षयन् ॥ ओं धना
ध्माघघघाटय २ सर्वइष्टा नवनक्षत्रसपनिवानान्कीलय
२ हूं हूं ॥ प ॥ दक्षिणधनाध्माहगवनिमाकर्षयन् ॥ ओं धना
ध्माघघघाटय २ सर्वइष्टान्सपनिवानान्कीलय २ हूं हूं ॥ द ॥ अमे

दि.वि
२६

यमदागिरुगवनीमाकर्षयन् ॥ अं यमदानीयघघघाटय २ सर्वदृष्टानि तस्य
निवानान्कीलय २ हंरुट् ॥ अ ॥ नेत्राभ्यां यमदानीरुगवनीमाकर्षयन् ॥ अं य
मदानीयघघघाटय २ सर्व
हंरुट् ॥ ने ॥ वायुव्ययड २
दृष्टान्त्रात्सपनिवानान्कीलय २
द्वीरुगवनीमाकर्षयन् ॥ अं यमदं
द्वीयघघघाटय २ सर्वदृष्टवायुत्सपनिवानान्कीलय २ हंरुट् ॥ वा ॥ ॐ
भतयममथनीरुगवनीमाकर्षयन् ॥ अं यममथनीयघघघाटय २ सर्वदृ

उमृ
२६

दृष्टान्त्रात्सपनिवानान्कीलय २ हंरुट् ॥ ॐ ॥ उर्ध्व उर्ध्वीषचक्रवर्त्तिन्म
हाक्रोधनाजं आकर्षयन् ॥ अं उर्ध्वीषचक्रवर्त्तिन्महाक्रोधनाजघघघाट
य २ सर्वदृष्टवृक्षादिन्म
थंरुनाजमहाक्रोधनाज
पनिवानान्कीलय २ हंरुट् ॥ उ ॥ अ
माकर्षयन् ॥ अं सुनाजघघघाट
य २ सर्वदृष्टपृथिसपनिवानान्कीलय २ हंरुट् ॥ अ ॥ पं. ला. घ. मु. ॥
द्वयपूजा ॥ धूनकाओकिनतपूजा ॥ भानतवलिविय ॥ पिथदिपूजा ॥ धू

दि. वि

२१

नकाउयंवापचानप्रजागनाक्रन॥ थनगन्मायाउपाध्यासांक्रपिहाउया
अष्टमिवनयागुआधमसचानाउगुनमउलवलिविध॥ ७ कचानमलसद
रुकावक्रउकाउकिर ह्यंमहुलपूजा॥ थननिष्पपनि
क्रमनंरह्यं॥ गुनमहु लदनक॥ ॥ धूनकाउनिष्पप
निह्वानपागलउआनकाउ॥ खकन

उन् ४
२१

मजनि॥ हनिष्पपिंचपिंसकस्यातंघीहनुकयाचतुर्थहिष्कलायधक००२
च्याकथुगुअहिष्कलाययाकनिष्पचक्रंततिक्तंतंअपालंअच
पिंसकस्यातं७ काययानास्वां आनाहाथजाऊलपंमहुलइहाउगन
च्याकानतंधासाथुगला कयानंमवूपनलाकयानंमवृकवल

७॥ रुनिष्पमकंदोवहवःकुकमहुलान्मयव्यांऊलीत्॥ न
हलाकंवासूदयार्थेतापिपनलाकसूदयाय॥ किन्दुनथाग

दि. वि

२८

कथागनयागुस्वनागनीनलायधकहायामंलुलसइहाकधकगुनूतंमिष्य
पिंकआहृदयकल॥ १॥

नकाययुयसपदप्राप्तय
सुसुसुदययूयंसुसुनीमि

मलुलप्रवभकाय॥ कथा
प्रावीयत्वा॥ १॥ हावना

२५

प्रप्रहामिआगने

स्वसनीनमखनप्रवभवजात्रिगसुप्रहायस्थान्स्वद्वीकिकिन
आकृष्टः सप्रहानथागनेडवीहरेनीहृषिकान्प्रीसमननूपन
ध्मात्वामलुलपूर्वदानउपविस्थप्रवभंयोवयम्॥ स्वकन॥

उनु४

२८

मसुक्रममि॥ हगुनूहनाथकुमकाययामंक्रकययानंमसुक्रमययानं॥

हयलूकाविष्काक्रचलयालहनेहिनिमंगललूसादिकलकंडुदकांस्

माननूपिहमडइनावांपि

सत्वप्रातिपिंकथकयानक्रायानाविष्का

कलुलयालहगुनूहनाथधकडि

पिंमिष्यपिंसंप्रार्थनायाना॥ २॥

मि॥ मसुक्रमकुमानकमकनादिहयापहान्॥ हवा

विमवउद्रल्लंमलाहामहानक॥ २॥ २॥ २॥

दिना
२८

ॐ चम्पहं ॥ हगुनूहनाथकधंगुवाधिहानयागुनमसुवातगुच्छ
यानाथगुवाधिहानलायधकचिन्थिनयायधन. हनं हगुनूहनाथकि
मिरुसमयकत्वंवाधिविन्थि यागुहानविहविष्ठाद्रधकंकिपिंस्त
कस्यानंगुनूयाकिप्रार्थना याना ॥ ३ ॥

मि ॥ ॐ चम्पहं महानाथमहावाधिनयदहं ॥ दहिम
समयकत्वंवाधिविन्थि चदहिम ॥ ३ ॥

उनुः
२८

वृद्धधर्ममि ॥ हगुनूहनाथकिपिंस्तकस्यानंगुनूधर्मसंघयासुनस चम्पवि
ष्ठाद्र. हनाथहगुनूकअधंगुमाकपूनस्तद्रु चम्पविष्ठाद्रधकगुनूया
ककिपिंमिष्यपिंसंप्रार्थ नायाना ॥ ४ ॥

॥ मि ॥ वृद्धधर्मसंघं चदहिम नमस्तुभ्यं ॥ प्रवलयस्वमा
नाथमहामाकपूनं नमः ॥ ४ ॥ नदन्मिष्यमकंप्रमिधिरुम्.

दि.क्रा
२०

अहिनि॥ हनिष्यपिंडा २ धक मनुचर्या लायुन मया विधिकतया रुम.
हायात सइ हाड मच्छ मिह लिंकनं विय कल. हनं मनुचर्या याग रव कतया
कथन च पिंड कल हनिष्यपिं धक गुनं आहाद म कल ॥ ३ ॥

॥ ७ ॥ अहिवत्स महायाते मनुचर्या नयं विधी ॥ द
नयिष्यामि रुसम्य कृतां जनस्त्रं महातय ॥ ३ ॥

गुन ४
२०

वृद्धा म्नि यति॥ हनिष्यपिं स्वर्ग लिं स विष्ठा नाचां पिं कथं गक पिं स कायवा
कचिन् स्वर्ग लिं क्रा दुका ना दुल्य म इग हान लाना व वज्र स्व नूय ग म नु या
प्रहावलाना व ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ वृद्धा म्नि यध्वं स मूना ४ कायवा कचिन् वज्रि ॥ स
प्राहा हान म दुलं वज्र म नु प्रहावने ॥ ६ ॥

दि. वि

२९

मनुमि॥ हनं हनिष्यपिं मनुया प्रयाग स मात भना म इ रुधं गुवलखग
थ धासा भव्य सिंह हगवानं क प स्या याता विष्णु वल हयं क न रु मा चापिं
मानग स पिं उ या इ र व मू (उल उ गु व ल ह ग वा नं ग्री ह न क या मं
प्र या ना वि ष्णु क उ गु व ल मा न स न्य द का हू ना वि ष्णु व न मा न जि
क य या ना क प स्या सि द्र या क म नु व ल थ लि इ ध क ग न म आ ह द य क ल ॥ १ ॥
ग ॥ म नु प्र या ग म ड लं य न ह यं म हा व लं ॥ मा न स न्य म हा धा नं भ व
सिं हा दि हि र्व ले ॥ ३ ॥

ग नू ४

२९

लाकातमिमि॥ हनं सिष्यपिं द्रापा श्या क थ ग क पि सं सं सान उ द्रा न या थ
ग हू न ला ता ध र्म च क प्र व रू ता या ना ति र्वा न प द ला ना वि ष्णु क अ थ या का
न स ह नि ष्य पिं च मि स नं क थ ग क या प द ला य क म नु हि ध क का
य ग चि रू या ध क ग न म आ ह द य क ल ॥ ८ ॥

ग ॥ ला का नू च्छि मा गं म्प च क प्र स न्प ति र्वा ना ॥ क स्मा न्म मि मि मा
व त्स क नू स र्व ह प्रा न्प थ ॥ ८ ॥

दि.वि

३२

नत्तययनि॥ ह्यनृहनाथवृद्धधर्मसंघयासननजिपिंउतनरुलदकापापंका
नरुलसंस्तानउद्रानकयूगधर्मयायनरुलनथगनयागवाधिहानलायग
चिरुनयनरुलधकागनया कप्रार्थनायाता॥८॥

मिष्यविधापथरु॥ नत्तययमगननसर्वम्यनिदिस्तमयं॥
अनमादकगत्पुत्थवृद्धवोक्षेदधमम॥९॥ खकन॥ पुन॥
अध्वयत्त॥

उत्तर

३२

चक्रनि॥ हनंह्यनृहनाथचक्रदेवनापिनिगुक्तविरगविष्ठाद्रुआर्यपि
निगुविधिकर्मनृदयकस्यविष्ठाद्रुधकागिष्यपिगंगनयाकप्रार्थनाया
रु॥१०॥ मृह

॥नि॥ चक्रदेवर्त्तुसत्त कंदत्वाताथदद
त्वम॥ चक्रदेवनयांनृत्वाचार्यपनिकर्मच॥१०॥

दि. वि
३३

स
समयमिति ॥ हनाथहृगुनदकाकथगगपिनीगुआहतिनागुगुउरूम
शयाचांगुधर्मलायगुहंतआचार्ययागुहंतलायचूयाकाननंधासाह
त्वप्राप्तिउधनयायकान नधकगुनयाकप्रार्थनायाना ॥ ११ ॥

॥ नि ॥ समयं सर्ववृद्धानां समयं शुद्धमरूमम ॥ आ
चार्यस्याम्यहंतिन्यं सर्वसुखार्थकाननधम ॥ ११ ॥ ननावाचिरूम
त्वादनेकानयन् ॥

उनु४
३३

धक

समन्वमिति ॥ हृगुनहनाथजिमिकनकायासविष्ठाद्रुदकाकथगगवाधिसत्व
पिंकविंजियानाजिमिसंथउ१२नामथोयादिननिह्यंवाधिमलुलखंडमश
लउलानलंधूगधर्मला यठ्छशल ॥ १२ ॥ अलोन

नि ॥ समन्वाहनउमाम्मुद्रावाधिसत्वाअहममकनामा
वृमंवलाम्पादाययावदावाधिमलुनिषलुनान् ॥ १२ ॥

दि. वि.
३४

उत्पादयामि॥ हनिष्यपिंजिमिसंरुधंगुवाधिहृतलायिणचिरूयातावि
यागधस्वगलसुविष्णुपिंरुधगमपिसंथुगंअहिषकलातानिअयनंधा
धिहृतलातावतडाथंछ पिंसकस्यानंलाक्कइलधकागनुतं
आह्लादयकल॥ १३॥

॥ग॥ उत्पादयामिपममंवाधिचिरूमनरूमे॥ यथाश्रियध
कानांचसंवाधेकुरुतिप्रया॥ १३॥

उनु४
३४

सत्त्वार्थ॥ हनाथहगुनसत्वप्राप्तियाकउप्राजयाथकाननंभीलसुहावतिं
काअहिषककायधकाकाहुकचिरूयायधूत॥ हनंहगुनरुडाधनध्रु
कयाविष्णुपिंवृद्धधर्मसंघ पिनिगुप्रसादनंजिमिसंलायधूत॥ १४॥

॥नि॥ शिविधंभीलमिकांचकलंधर्मसंग्रहं॥ सत्त्वार्थ
चक्रियाभीलंप्रतिगुक्राम्यहंदटं॥ वृद्धधर्मचसंघंचक्रि
नलायमनरूजम्॥ १४॥

दि.वि
३५

अध्यायमिति॥ हनं हग्नू हनाथनथगनपियांगंत्यन्ति इगधर्मग्रा.
किमंकायशूल॥ हग्नू वज्रघननिगयामूद्राकतं किमिहंकायशूल
॥१५॥

॥ मि॥ अध्यायमगृही ध्यामिसम्बन्ध
द्रयागजं॥ वज्रघनचमूद्राचमिगृह्णामि नत्वगः
॥१६॥

उत्तर
३५

आचार्यमिति॥ हनं हग्नू आचार्ययागकतं लायशूलनधं क अकायक
थागनयाकूलनउरुमजयाचांगप्रसादं लायशूल॥ हनं हग्नू यमादानं
किमिहंकायशूल हनं क्रिथं १४ त्यानमिकाधर्मसचानशूल॥१६

॥ मि॥ आचार्यचगृही ध्यामिमहावज्रकूलाचय॥ चतुर्दा
नंप्रदास्यामि षट्कृत्वा तु दिनदिनं॥१७॥

दि. वि
३६

महामन्त्रिनि॥ हनं ह्यनुकधंलनंलसंरुवकथगनयाकूलयागकयाचान
उज्जिमनानमकयावांगवचननंरुल॥ ह्यनुहनाथवाक्यगकप्रियान
कसागयानसंप्रकाकया चानुधर्मजिमिसंलायकल॥ ११

नि॥ महामन्त्रकलयाग समयंचमनानम। ह
धर्मप्रतिगक्रामिवाक्यगकप्रियानकम्॥ ११॥

उन् ४
३६

महापद्मनि॥ हनं ह्यनुकडाधनज्जिमिनारुकथगनयाकूलगउज्जकया
कधंगवाधिरानउत्पक्रियुगसकनांसंरुक्तकडागधर्मलायकल॥ १२

॥ नि॥ महापद्मकलउज्ज महवाधिसमूहव॥
समनंसर्वसंयुक्तं प्रतिगक्रामिसर्वक॥ १२॥

दि. वि.
३१

पूजाकर्मणि॥ हग्नृहनाथअमायसिद्धिगुणगुणयाकूलननधंगुकर्म
लाययाननधंगुवाधिविचिरूहानउत्पल्लियायकूलधकसहग्नृयाक
चपिंमिष्यपिसंविननि याग॥ १८॥

॥ नि॥ पूजाकर्मयथाशक्त्यामहाकर्मकलाचय॥ उत्पा
दयामिपनमंवाधिविचिरूमनूरुन॥ १८॥

गुण
३१

गृहीत्वा॥ हनिष्यपिंहनंसत्वप्राप्तीसकस्यानंउधनयायकाननदकाधर्म
कायकूल॥ थूगधर्मनंसानंननयायमरूक्याकननयाककूलमाक
मउंनयाकमाकथयक लविष्मसमयाक्याकविष्मसया
यकूलथूगकथयानादक सत्वप्राप्तीपिननिर्वातपदसकयेशल

॥ ७॥ गृहीत्वासम्बनंकूलसर्वसत्त्वार्थकाननन॥ अनीक्ष्माकनयिष्या
मिअसक्तान्भाचयाम्पहं॥ अनाश्वक्तानात्वासयिष्यामिसर्वसत्त्वस्थ मिमिमिषु
॥ १८॥

दि. वि
३८

थनमधुलविसर्जनयाक॥ नक्राविय॥ ओं वसुभाहूरु॥ थमलुनस्वा
नं चूक॥ लावना॥ कयां हत्क॥ १४॥ सिनसिवजपमचक्रापनिसूर्यचन्द्रस्थ
नीलकण्ठनक्तगुक्तानि
आकर्षणपाशादितिनांज
पान्गलमचननिक॥ ओं आ॥ हूँ॥ स्वानं चूक॥ हूँ॥ अतधूमनकन॥
थनमात्रानं पनिक्रमसं चूक॥ २॥ मिखापियकं हयागभक्तनं इकथनस्व

उमृ४
३८

स्तिकसकथ॥ दंनकायवांत्याक॥ मलु॥ ओं वज्रहासहं॥ अस्तिदनाग
कलमलंगवनं नाचायकमलु॥ ओं जीविगुध्रधर्मसर्वपापानिवास्पवि
॥ मधयनिर्विकल्यातप
नयानकव्रनकादकसभंद
चि॥ मिषयाकदायस्वथ्माथ्मास्यं वज्रगधिचि॥ याओ॥ वसुभाहमलु
नं वक्राविय॥ ओं वृद्धमेडीनकसर्वान् स्वाहा॥ थमलुनलाहाकसचिना॥

दि. वि
२९

अनमि॥ हृग्नृहनाथकिमिसंक्रायाः अपालंकाटिकल्पपापयानागद्वयपा
पदकांसुकल्पंधमस्तद्वर्तनयानामाश्रयनं रुनाडानहनेदकोरुः
खड्गल्लिखयाचांतगुन नकसगनमालधकगुन्याकप्रार्थ०

धडा॥ असंक्रय॥ खकन

मि॥ अतककल्पकाटिहिर्य

कर्मपापकंपुना॥ नखर्वहीकयंयंतिदृष्टामुलमीदृशं॥ उत्सना
इगमिदृषांसर्वइ॥ खस्यसंहवा॥ २९॥

उवृ४
२९

अपामिमि॥ हृग्नृहनाथधृग्नृउधंगचर्याखद्वर्तनयानामाश्रयनं चिरुति॥
मल्लशयाडानआजिमिसंक्रायाः अपालंकाटिकल्पपापयानागद्वयपा
नधककिमिमिष्यपितंगुन याकविक्रियाना॥ २२॥

॥ मि॥ यथाचर्यावनकस्मि

नमिनन्युक्तनिर्मला॥

अश्रयस्माहिमकुलालचल्लालान्महात्महि॥ २२॥

दि. वि.
४०

यनकि॥ हनंमिष्यपिंम्राअच्छपिंसकलनथगनयागज्राहान्यपिंशलग
लिंकथगनयाकायशुल्लिथकनमसकथगनशयुशुल्लहनेथगमहाया
नसइहाअयागलिंरहस्य

कानिमषुनसूकानशुल॥ २३॥

॥७॥ यनयूयंमहायानसू

कानाहिरुविष्यथ॥ स

वपनिगृहीताप्रजायमानांमहात्महि॥ २३॥

यन४
४०

अषमार्गकि॥ हनंमिष्यपिंथधर्मयामार्गवांलागुरुधंगरवमहायानं
उत्पन्निशुयावांगरवज्राच्छपिंगुलनंडायाउगुलनंलिहाअयम्वाल
च्छपिंसकल्यंनथागन

शयुशुल्लधकगननंज्राहदयक

ल॥ २४॥

॥७॥ अषमार्गधनः श्रीमान्महायानमहादय॥ यनयूयंग
मिष्यनारुविष्यथकथगन॥ २४॥ यनगुननंकृगपृष्टि वि

य॥ म॥ उ॥ धी॥ खा॥ हा॥ उ॥ व॥ क॥ नी॥ क॥ व॥ र॥ व॥ अ॥ नी॥ हा॥ म॥ ल॥ क॥ न॥ सि॥ ह॥ ल॥
 य॥ व॥ क॥ न॥ क॥ म॥ ना॥ क॥ न॥ क॥ मा॥ प॥ न॥ इ॥ हा॥ उ॥ ना॥ म॥ ल॥ थि॥ ल॥ कि॥ व॥ क॥ न॥ क॥
 नि॥ ना॥ क॥ मा॥ प॥ न॥ आ॥ शी॥ वा॥ द॥ चि॥ न॥ य॥ जा॥ मू॥ ल॥ द॥ क॥ म॥ स॥ क॥
 स्या॥ न॥ स्वा॥ सि॥ द्वा॥ वि॥ थि॥ द॥ ग॥ लि॥ स॥ म॥ य॥ खा॥ ज॥ ल॥ हि॥ थि॥ गी॥ न॥ द॥
 पू॥ मा॥ ल॥ स॥ म॥ या॥ च॥ क॥ ग॥ म॥ च॥ क॥ धू॥ मा॥ ग॥ नी॥ म॥ म्या॥ ल॥ अ॥ धि॥ वा॥ स॥ न॥ इ॥ वि॥ ये॥ उ॥ ष॥
 न॥ क॥ ल॥ म॥ आ॥ ग॥ वा॥ य॥ जा॥ म॥ ल॥ ॥ ४४ ॥ नि॥ अ॥ धि॥ वा॥ स॥ न॥ ज॥ य॥ मि॥ त्र॥ न॥ वि॥ धि॥ ॥

क॥ न॥

उ॥ न॥ ४९

उ॥ न॥ म॥ धी॥ ह॥ न॥ का॥ य॥ ॥ ॥ ह॥ नि॥ क॥ क॥ स॥ थ॥ क्रा॥ या॥ व॥ लि॥ पा॥ न॥ ९॥ वि॥ थि॥ म॥ न॥
 ल॥ न॥ पि॥ हा॥ आ॥ या॥ अ॥ मि॥ थि॥ प॥ नि॥ स्व॥ प्र॥ द॥ न॥ प॥ र्वा॥ त॥ न॥ क॥ मि॥ उ॥ न॥ आ॥ दी॥ प॥ न॥ ज॥
 स॥ र॥ स॥ प्र॥ क॥ ल॥ म॥ अ॥ म॥ न॥ क॥ उ॥ लि॥ म॥ न॥ न॥ क्रा॥ या॥ थि॥ क॥ थ॥ य॥
 क॥ या॥ अ॥ य॥ मी॥ उ॥ न॥ म॥ न॥ ल॥ वि॥ स॥ र्ज॥ न॥ या॥ थि॥ य॥ मि॥ स॥ च॥ य॥ क॥ ल॥
 थि॥ ॥ थ॥ न॥ लि॥ द॥ व॥ का॥ उ॥ न॥ अ॥ त्य॥ न॥ न॥ स॥ आ॥ दी॥ अ॥ न॥ वा॥ हि॥ सा॥ य॥ सूर्या॥
 र्घ॥ पू॥ जा॥ ह॥ सं॥ क॥ ल्प॥ या॥ स्य॥ क॥ थ॥ य॥ न॥ या॥ थि॥ पू॥ जा॥ क॥ र्म॥ उ॥ थं॥ आ॥ ग॥ वा॥ य॥ जा॥

दि. वि
४२

नमस्कान॥ गीत॥ उत्थंमाल॥ देवयुजांमं तुल्यपुत्राकि नतसुहिं वलि
विय॥ पीथदीपुजा॥ धनकाउचक्रं धनीमात्रानि क्रसुयापूष्यमूडान
मित्यकथागरुमकूट॥ स्वा नमकूटकसाग॥ माशयावृष्टि
कर्जल॥ कमरवकीखाग॥ देवयुमं स्रकस्यानं॥ माशयाग
वागभकर्जुपकामय॥ नालकाय॥ चक्रं धनीनमं तुल्यप्रदक्षिण॥ घंठ
धामं चचाकउले॥ गमथ॥ प्रविमं तुल्यगवन्महासुखमाक्रुपूवं सर्व

उनु४
४२

॥ मधुनप्रदक्षिण॥

सिद्धिसुखप्रदं पनमसुखान् मसिद्धार्थं ज४ हूं वंहाः प्रसिद्धं ४ स्व४॥ ॥ स्वा
कस्वानजानकं दानरवारवनयमिमसुचानाडी पूर्वया दानरवारवन॥ अं
वजात्याट्यसमयप्रवंत यहुं॥ धमकुनचकुर्वानस्वनक्रुअ
नवानास्वानमं तुल्यसुखं याहावयायनस्यमडाकास्यस्वान
मालाधमं चय॥ अं पनमसुखास्यसुनलिनविलासनमामिनमिं नज४
हूं वंहा४ हीहीहीही प्रमिच्छकसुमां जलिनाथही४॥ हानं घ४ धामं सुवा

इ.वि
४३

कउल॥गाथ॥आका॥मत्यादविद्रुत्वादनादिनिधनपत्र॥महावज्रसमय
सुखनक्रास्यवज्रप्रसिद्धमसर्वात्ममहासिद्धिमाहेस्वर्यादिदेवक॥सुवज्र
धमाजाजासिद्धिमपनमा कन॥निर्दिष्ट॥मत्तश्चापिसर्वमा
भनूनामिह॥नत्वनसिद्धि भगवन्महाना॥ममहानक॥अ
क्राह॥७७धर्मायनादिमूक्तकृत्तगम॥समकह॥सर्वात्माविहित
प्रसिद्धमसर्वात्ममहासिद्धिमाहेस्वर्यायमूडयासिद्धिवक्रमहात्कर्वा

गुन३
४३

यनमयनसंज्ञानप्रज्ञापायात्मनुरुत्

त्वज्जगर्हायकमम॥सर्वसुखमनाव्यापिसर्वसुखसुखिस्थित॥सर्वस
पित्तवैवकामा॥प्रमयायिसं॥कनसुखनमनाथकामाप्तिपूज
यन्॥मंउलसकृत्कन प्रतिविम्बसमाधर्मानकासुद्रा
कनविला॥अग्रहान रिताव्याचहृदकर्मसमूहवम
मनकन॥कथनाकलनिर्यानाळुनिसुखनमलुं प्रतिविम्बसुद्रमि
व्याःसर्वप॥धुक्कलमवा॥॥थनचुल्लुकपमहाकनलहिचक

॥ आचार्यवचन ॥

धनकल्याणप्रपतिमनयुजाहसमलजानकमाशक्तआविभयानकंपा
उजानकंपिहाडाय ॥ आश्रमसंशानागवमाशनिक्तमनगुनमधुलच
गुयाथधूनकाउविस्तर्जन धनमिष्यपत्रिकमननस्यंगुन
मधुलदनकविस्तर्जनमि ध्यावता ॥ नरु४मिष्यवैवाचना
नूपमभवलंविनंविहाव्य॥ सर्वकर्मिककलजकलाहिषिकं ॥ कलम
लंवनस्यमंखलखनहाथ ॥ हलकसिन्धुवक्षपमचक्रसूर्यचन्द्रा

गुन४
४४

॥ नरसिंहपुराणायक ॥

पनिक्तं हंकांनंनक्त आंकांनं गुंकांनं नस्मिषतावनसमीनहं ॥ ६०
सूचार्थ ॥ तिनांकनवक्षमाचामनहंकाय ॥ पंचगव्यविय ॥ मनु ॥ आं सर्वक
थागमानूरुनवाध्यालंका नवक्तुपूजाभयसमूडरुनमसम
यहं ॥ आं वक्षनक्तहं ॥ नत्त मंडलवायक ॥ पूजादकला
दं२ नयकंगुनयावदीहलय ॥ वाक् ॥ चतुनत्तमयंभव्यादि० ॥ गुन
माशक्तिअर्धयामकं ॥ वाक् ॥ आं ४४ प्रवमसक्तानायसक्तगुनप

इवि
९०२

१ सोमः ॐ ऊनिमो वज्रवकुपीमरुट्कानं विहाव्य ॥ वामवामांगतानाडीप्र
स्थवकुडीः कानयामर्जन्त्याजिह्वाचभीरु कानपूर्वकं संवाप्य ॥ ॐ श्री ३ ह
४ स्वाहा ॐ सर्वमथागतान् नागभवज्रस्वरावात्मकाहं ॥ ॐ किम
कुमावर्त्य नृपदक्ष त्यक्तानंदरुदं स्वहृदी क्विन्नसा
कृष्टमथागताद्यधिष्ठितमनागुनमचप्रवर्तितापनिमित्तवैनाचनला
चताद्यकवहीरुमानिमानरुम् ॥

उनु
९०२

वज्रप्रीति ॥ हनं हविष्यपिं वज्रपलस्वानस्रकया डीहावनायावाधिचिरु-
न हाकाममम ॥ हनं यूगहानहाकनहाथुगचिरुलायमष ॥ ४४ ॥

॥ ७ ॥ वज्रपमं प्रनिशा
अरु ॥ ऊहयित्वा नचात्मा
यनु ॥ ४४ ॥

प्यवाधिचिरुनचात्मा
नंचिरुमृत्यायवाध

५वि
१०३

यावन्नकि॥ हनं हनिष्यापिंकागन्धनपिंसंमलान्वाधिविचिरुहानका
मलडालानं ज्ञानन्दकयुगसुखलायमपूज्यथाकानसंभवलसं
त्वामदयकहानलायग ह्य॥ ४५॥

७॥ यावन्नकूनकयागा वाधिविचिरुविसर्जनम्
नावत्प्राप्त्यविच्छिन्नं किमस्यातन्दकं सुखम्॥ ४५॥

उत्तर
१०३

पमिक॥ हनं वाधिविचिरुहानलासंपलिनंदकासिद्धियाषानिलायुक्ताना
हानमसियामूर्च्छासंपलिसिद्धिगनलायुज्यथाकानसं॥ ४५॥

७॥ पमिकवाधिविचिरु उत्सर्वसिद्धिनिधानके॥ मू
र्च्छितकश्चविहानकूनः सिद्धिनिदिना॥ ४५॥

हि

॥ इवि ॥

॥ १०४ ॥

हृमिष्यपिंहानडामिलरुगुज्जमि^{हा}मलागुमल्लानडावजपर्यकासन
धानगुचिन्मयामनाच्छयायममंधकगुनमंआह्लादयकल॥४१॥

ग॥ प्रह्लासंपर्करुपीमान
रुमिन्मन्यरुगमिच्छ

नत्वसनमनरुय[॥]रुययक
य॥४१॥ मधुलविस्तजनविषा

रुफथडा२धमंनय॥ ४०मिप्रह्लानाहिषकः॥ रुमचवुर्थहिष
कः॥ ४१दानीहानविमधनार्थयथैकविधिनाष्टहीमंप्रह्लाह
नाहिषकसेवचवुर्थहिषकहलहूमहिष्यकनत्ववह्वं

॥ ७२४ ॥

॥ १०४ ॥

नारिषि[॥]हृमिष्यपिंज्रहिष्यकमलाश्रयागिंरुत्वलायधक००
क्रायायुहनेअहानीसनंलाहागमशमूचिनाआकागहाथयधयपृथि
रुक्रायधयहूमिह्लालाभा
कंधकडाउधंरुलधक

नधकधयधज्रहिष्यकयारुवमसु
गुमंआह्लादयकल॥४२॥

॥ ७ ॥ नारिषकाहियायागित्वंमहिवांरुमि॥ हन्यरुमृष्टिनाका
नपिवचमृगंरुहिंका॥ ४२ ॥ यइरुं॥

शिव
१०५

धूमनि॥ हनं हनिष्यपिं गगथसक उलउगथमिदधकसिथगगथसवा
हकनाचानउगथसलखइधकसिथहनंगगथसमनव्यलाकमनाचान
उगथसकानतइधकसि यथोवाधिहानयामरुधकवद्विवक्त
पिसंधयामग॥४८॥

धूमनह्यायमवक्रिधमलिलकुवलाकया॥ निमिर्हृष्टमरुगमइवा
धिसलस्यधमिमा॥४९॥

उनु४
१०५

अहिषकनि॥ हनं हनिष्यपिअहिषकस्वमाप्रकानइधकथगंउसधया
कलकृच्छ्रमाआचार्याहिषकगुअहिषकप्रहृहानाहिषकधस्वगूर
हनंधधममागय्यगइधक गुवंआहदयकाविद्यफ॥५०॥

पूतमाह॥ अहिषकंनि । विधहिन्नंमसिंकलुप्रकानि
नं॥ आचार्यगुअप्रहृवचवउर्थमत्पूनस्तथा॥५०॥

॥ ३६ ॥ पञ्चमानन्दैः ॥ हनं हनिष्यपि न ध्वं जानन्धया गुरुगपमधया कलनाग
 ॥ १०८ ॥ मङ्गुतिर्वातपदधलवृद्धिरयाचापि संमध्यमजानन्दयामहकानन्दध
 लअध्याकावसंथुगहा वसियकासियकमर्याडावानध
 कगनमआह्लादयक ॥ ५९ ॥

पूतः उक्तं च ॥ पञ्चमानन्दहगंधान्तं निर्वानं च विनागरः ॥ मध्यमान
 न्दवेमाउं तु सहजमहिर्विर्वर्जितः ॥ ५९ ॥

॥ ७५ ॥
 ॥ १०८ ॥

अनादिति ॥ हनं थुगहावआदिं मङ्गुधनकयाडावानसंरुकायाडावानहावअ
 हाक्याआत्माक्याकधं प्रदुकायावान ॥ हनं सत्यनाकं वमहिन्नक्यावानवा
 धिविरूहानधकाधयाकल धगनंआह्लादयकल ॥ ५९ ॥

अनादिनिधतमकं हावा हावात्मकं विभुं ॥ सत्य
 नाकचमहिन्नं वाधिविरूमिनिस्सुगं ॥ ५ ॥

इवि
९७

अयमि॥ हनंमिष्यपिंस्तदां संस्तानस्तस्वरागयानाविष्कामनां संस्तान
हीनयानाभिराथेगृह्णानिस्तथाक्याकनकायायीकूलहनंमथगनपि
संवचनदमिदकूलसांअय अयगृह्णमयहानकनाविष्काम॥४६॥

अयमिस्तस्वनाकागुवका नहिम४सदोदिऊगमां॥ऊ
स्तुतिगहनसमयवचनदमिडावहूबसर्वहू४॥५२॥

उम४
९७

स्वस्वमि॥ हनिष्यपिंश्चज्ञानअयगृथिंधासाथवृथमनंऊकसियजि
यावचागृथथेचांधकनमजियाचांगृह्णयांगोचनमदयाचांगृह्णानम
ज्ञानअधिष्ठानयानाक आगदयाचाकहूतसियुगधकचि
मिसंसियाका॥५४॥

स्वस्वधमिमिहानंवाक्कथगीनलमचनं॥अधिष्ठानंपदंऊक
सर्वहूहाननमयं॥५४॥

शुवि
१०८

नमस्त्वमि॥ हनं निष्पिपिंथुगवगुनं स्याकं मज्ञा स्याकं मकं धयथधकवि
रूवमनं मया हनं थुगुहावयानं संमस्युसुनानं कनं मइ आथयकात्र
नं हनिष्पिपिं हिनकं गुनया सवायाडाथमं नं सियथकाधकगुनं
आहादयकल॥ ५५॥ थलिचगुर्थहिषक॥

॥ ७ ॥ नमं वायुगुनं कहठं नमं वजाठं गीमः ॥ सुजावस्थाअ

उन्म
१०८

॥ विद्यावृत्तः ॥ ५॥

मीयनसकासकहिजपिकीनः ॥ तस्मात्सम्पक्कं गुनमानाध्वसचि
ध्वे॥ ५५॥ ॥ ठं निगुर्थहिषकः ॥ ॥ ७ ॥ नमं मदीयालाहाकया
पुनमयालाहानसवि य॥ ७ ॥ नमं घ॥ डादं रकडालाक
जाना निष्पपनि सजडा लाहानवडातकानि सस्यासि
ननापलाककं वजतं थिस्पं नाकिथाय॥ सिहं लयं॥

इवि
१०८

साकिनामि॥ हनिष्यपिंजाचपिंशुपुनरुपतिहं गभवत्पंवायमइजिंछ
मिरुमंडदानविथधनजिप्रमरवंकथगगपिंसाचिआयधन॥ ५८॥

॥ ७॥ साकि॥ भूयंम
किरुथगनासाकीक

कृत्तमपिं॥ यमस्मेमथ
॥ ५८॥

७५४
१०८

नान्योपि॥ हनिष्यपिंजाचपिंशुतमगाउपकानचंयायमइकवल
स्वर्गमध्यपानालसगुरुयौगधर्मककहापिगभवत्तमंशुपुनरुषवा
यधकच्छकायायमइथ ७ रुधंगविद्यालायीगव्रकधकरु
थगगपिंसंजाहृदयका रुगहनं गभक्तमरुवपिंसंथगव्रक
मानीउक्तस्यंनधंगसिद्धिलाठंमव॥ ५७॥

नान्यापायनवृद्धस्यंशुंरुचंदंजगदुयं॥ कस्मानुविथागमनसामा
कार्षिंश्चकदावन॥ ५७॥

पञ्चवक्त्र ॥ १५८ ॥

ॐ दं नमि ॥ हनिष्वापि दकारागगनपिसं ग्रहनयानागगधवज्ज्जकमिसं
 हिं कं लाहानं जानावानमालचिरुक्ता उकावज्जपा नियावक ॥ अधल
 पावानमालधकगुनं ॥ आहादयकल ॥ ५८ ॥

ॐ दं नमस्तु सर्ववक्त्रानां विर ॥ यावकमनूरु अतिकामनित्या
 मूढः सिक्तस्मनचाहमा ॥ ७७ निपथय ॥ विद्यावक्त्रविधिः ॥ नदनमि
 ष्यवज्जधननूपं विहाय ॥ ७७ ॥ ॐ दं नमस्तु सर्ववक्त्रं वज्जसत्त्वकमस्थि

उन्म
 ११०

॥ सहस्रवक्त्र ॥

नः ॥ त्वयापि हि सदा धर्मवज्जपा निदं वुक्तं ॥ ५८ ॥ धूमिपदपं वज्जवि
 य ॥ ७७ ॥ ॐ सर्वमथागतसिद्धि वज्जसमयत्वां धानयामि वज्जसत्त्वकीः हि ४
 हं ॥ धमत्रुपंदपं ज्जानव ॥ ज्जानक ॥ ७७ ॥ दृष्टानमसो वीर्य
 मय्य ॥ धारुयलकलं ॥ आ ॥ दाहि अविना निच ॥ नमो गावज्जम
 चम ॥ ॥ ७७ नि वज्जवक्त्रविधिः ॥ ॥ धनसहस्रवक्त्र ॥ धनयंचमस
 याकरवलकक्रियां ॥ गीता ॥ वामादक्षीन ॥ विधि र्थं फलं कच्छय ॥

॥ मूडा रूपपना ॥

थनं लिच्यो वन ॥ निष्पपति कृतान् अष्टदलवाया कति मया ॥ मूडा
 स्थपनाया यथा लवलि पात ॥ १ ॥ ॥ थ ॥ २ ॥ खानं चूय मूलमरु ॥
 ॥ ॥ तावता ॥ यालुया ॥ धिगं वज्रवा नाही नूपां स्वयं वसुध
 वनूपां विचिन् ॥ नम्रा ॥ सिन्वा द्रवी कृतमयूरे नानी गां ह्रा
 नदवनां प्रवस्थ ॥ आ. पा. नी ॥ गीत ॥ हा ॥ रु. न. ॥ मूडा हावता ॥ चकि
 व. लुल क. ली नूचक मखला ह. भयथा कृतं ॥ अका स्यामि ताहनल

उनु ४
१११

॥ धीनवर्ग ॥

सकृद्वेनाचनामा घसिद्धि नूपा न्मटि निविचिन् ॥ नय हान सत्वं
 कथनीकं प्रवस्थ ॥ आ. पा. नी. प. यं ला. पं. सु. कं. ॥ मू
 डान किय निष्प ३ ॥ अन. गीत ॥ धन २ ॥ ॐ ॥ धी वज्र हं हं नू
 कं हं हं ॥ अकिनी जाल सम्यं न स्वाहा ॥ ध २ ॥ ॥ ॐ ॥ सर्व वज्र
 अकिनी यवज वलु नीय वज्र वेनाचनी थ हं ३ ॥ हं ३ ॥ स्वाहा ॥ ध २ ॥

* जापवलि ३

[illegible]

७५४
११२

स्वाध्वकहंरुट्स्वाहा॥ॐ सर्ववृद्धतां किनीयमादि०॥ध३कलीयीव॥
 गृह्णदरुमनावीनकंठिकानवसंरुवात्मकं॥पीवजसत्व०॥३॥ॐ॥
 ध्वगधनम॥ध्वगधुध्व
 :नमःहिस्वाहाहंवाघट्
 वयं॥गृह्णदरुमनावीननूचक॥ध्वमात्मकं॥पीवजसत्व०॥४॥ॐ
 कींघृहाध्वकहंरुट्स्वाहा॥ॐ हांयांकींमांऊंकींहूंरुट्॥ध३मख

उवि
११३

लाकरी॥ ओं गुरुदरुमनावीनमस्वलामाघसिद्धात्मकं॥ श्रीवज्रहं॥
 अ॥ ओं श्रीवज्रहं नूतक॥ धा३ नृप नवक्रसुयमसुमालाथडा३ धन
 ७॥ ओं कन३ प्रचा॥ सुहंरु
 माहगवर्गवीनवीनमू
 रुमनावीनरवघांगठमनया॥ श्रीवज्रहं॥ दृष्टिवागभकर्तुपनाका
 कारवागभविथरवालवलिविध॥ धनं लिखानमालाजानकं रवघांगन

उनुः
११३

॥सप्तपूजा॥

मिनसुथिसंमूलमनुनऊपयायधनकाउसिनसस्वानमालाहिन
 पं-ला-पं-मु-रु॥ ॥ नरु४ काषपानमास्वादयन् ॥ समयखाऊदव
 रुचयसिच्यत्वंनक
 लुल॥ पदहनस्य॥ ५२
 मलुलसुदक्रुता॥ गीमचक्रिक
 वासपंचभलिनक॥ माजानपा
 जमोकधनकाउसप्तपूजायामकसकसनं॥ गीम॥ कउन॥ सक
 नऊ॥ मूलयादक्रुताच्यक॥ खाऊच्यपालहिय॥ गीम॥ श्रीहं॥

॥ कथमग्नचर्या ॥

ॐ ॥ धूमकाशाभताकनविसर्जन ॥ मृडाकारु ॥ गीम ॥ सादभाहाय ॥ मृ
डापूजायाक ॥ दक ॥ अदंश्चयक ॥ किम्वननक ॥ खालवलिच्छय
॥ ॥ ॐ निवीनचर्या विधिः ॥ ॥ धनकथमग्नचर्या ॥
आचार्य ॥ चिवनकहा ॥ गनदयाडाकहागभयाचाषडा
नमूद्धितानगलसदिकाऊडाहाहनवनदमृडाकास्थव्याकन
॥ लयाय ॥ खकन ॥

ॐ
११४

उषाहंति ॥ हनिष्यपिंआरुमिनीजिंवरुसत्वमथगनरुयाचुमिरुथ
उवनदमृडाकनामथगनयागचर्यावियरुलरुयाकानसंधासासंसा
नखनूपिदुर्गतिनंथक याडाथगुपापसंनयानामथ
गनयापदलाकयारुध कंगनमआहादयकल ॥ ५९ ॥

का

ॐ ॥ उषाहं व्याकनामित्वांवरुसत्वकनस्थितः ॥ रुवदुर्गति
नादुस्यअस्यकरुवसांनय ॥ ५९ ॥ ॐ निव्याकनसविधिः ॥

इवि
११८

अथनि॥ हनिष्यपिंआकर्मिस्तकलं हर्षमानगचिन्त्यानाधर्मचक्रप्र
वरुनायाकुरुधंगुसंखलंनिर्मलकृयाचंगुधर्मपूरुषानाधकगुन०

॥७॥ अथप्रहृतिस्तह चिन्त्यादमादुतधर्मच
क्रप्रवरुय॥ आपूर्यहि समनाचधर्मसंखमनरु
यं॥ ६१॥ हावतामय॥ उवंसामान्यादहं॥ दत्ताऽप्यधिकान्
हंशकुंययाक्रमंमिष्यवेमाचननूपंध्यात्वा॥

गुन४
११८

सर्वसत्यनि॥ हनिष्यपिंहनंस्तत्त्वप्रतिपिंसंस्तानयालाकहीकयायक
हनंगाधसंसाप्रसथूगनमरुलअथनमयानाधर्मचक्रप्रवरुनायाकुरु

॥७॥ सर्वसत्वहितार्थय
विनयमाविष्यधर्मचक्र

सर्वलाकषसर्वकः॥ यथा
प्रवरुय॥ ६२ ॥

इवि
११)

प्रहृषायाजि॥ हतं चिह्नमतिनत्वयाहिमाः श्याचां गृहीत
नस्तीपुत्रवसंयागयायभाजाडास्तत्वप्रामिउद्रानयायधकं हा
पानतानंथूगचर्याया धकगुंजाहृदयकल॥ ६३॥

प्रहृषायासुनूपात्माचि कामनिनिवाचकैः॥ अवि
त्राविगतासंगः सत्यार्थकनूतं प्रकं॥ ६४॥

उनु
११)

अवंमिनि॥ हृगुबृहताथथगुप्रकानेछलपासंजाहृदयकाथंधर्मव
क्राप्रवर्तनाकिमिसंयायकलधकगुनूयाकिविनियाना॥ ६४॥

पण॥ ४०॥ निधर्मनृहृक्ष नवकुमत्वपमकमवक्रमह
प्रहृषायाचवधपा० नन हानंदयाम्॥ सवन्दित्वावदक
मि॥ अवंकनिव्यामियथाहापयनिप्रहृ॥ ६४॥ ४०॥ पुहान॥

॥ महत्तु अक्षरम् ॥

सिन्धुचक्रं हिलकमलाचार्यनक्षत्रक ॥ नदन्तर्वेमाचनदिनूपमवि
लंभितायमिष्यायजनह्लादप्राम् ॥ लचिकनंकिचके ॥ हृषीप्रम
कवडनामकथमगमसिद्धि समयम्बरुर्दुवधस्व ॥ मिष्यम
तुडयक ॥ गुनून्त्यया य ॥ गीक ॥ सुप्रकिमंतिरु ॥ दिग
सकथमगचिद्रविय ॥ गु ॥ मापांचक्रचिद्रविय ॥

गुनून्त्यया
११८

वेमाचनंकि ॥ हसिष्यपिंदथसुविद्यनावांमवेमाचनकथमगंयाचिद्र
थाचक्रछमिकवियाजास्वर्गमध्यपानालचललपंचांगहानमसिया
अजहानिकयाचांपिरुतु बंगुमसमाधियागहानलाकया
नजिनश्चिद्रवियाथथि मवेचनकथमगंछमिन्नकयाकशत

य२

॥ गु ॥ वेमाचनं ध्यात्वा चक्रहृन्महानं वेमाचनस्य द्विरुवचानिभं स
महाहमाहिकश्चमिनाकं वेमाचनस्य छचक्रं ॥ १ ॥ गीकचलं २ स

इवि

१२०

हतिष्यपिंपात्रिहविष्मनाचांमअमिनाहमथगमयाचिद्रथपलहां
 छमिभविष्याआउखर्गमधपाकालसचललयंचांगसिंहविक्कीडिमसमा
 धियाहानलाकयाकथविं क्रविष्याथधिंमअमिनाहमथगम
 नचमिभनक्रायाकक्र ल॥४॥

अमिनाहमथासिंहविकिडिहानंअमिनाहस्ये१डिहवचानि
 तस्य३निवावनस४सहाधर्मस्य३नागीनांनागप्रहनमहमाह
 अमिनाहनक्रपमं॥४॥ गी॥ मनाहं॥ विश्वरूपविय॥

७२४

१२०

अमाधमि॥हतिष्यपिंपुनूवसविष्मनाचांमअमाधमिद्रिभथगमया
 चिद्रथविष्ववडचमिभविष्याआखर्गमधपाकालसचलयंचांगवड
 पमसमाधियागहानलाकयाकानमंड४खदकाद्रकासखलाक
 याकानमधचिद्रविमा थधिंमअमाधमिद्रिभथगमंछ
 मिभनक्रायाकक्रपाय ३॥

अमाधमिद्रिंथात्वाविष्ववडंवडापमहानंअमाधमिद्रिडिह
 वचानि३॥३॥मक्रयार्थंअमाधमिद्रिविष्ववडं॥३॥नाग॥॥॥॥

स

इ.वि
१२९

क॥ कूटंगभूमिदं ननु छिन्नवननपाणिनामीकृताऽवक्रं च सिद्धं च
 मानुषानविव्यायकाननक्रादया॥ नृपाद्यानचधर्मनात्मककयाक्षम
 लुलयायिम॥ वि॥ धमलु लचक्रमाकननचन॥ किमृद्धाम्य
 ति॥ १॥ पुनः धस्थानव जमलपयकर्म॥ हक्याकूपंच
 धाप॥ १॥ ननरूनहानदद्यात्सवदित्वावदन्॥ सिकसतकिटन॥ आ
 चार्ययाजाधमवदनायानाकथनं च उक्त्वा॥ गुनमंलउज्ञाना

गुन३
१२९

अयं कि॥ हनिष्यपिंछमिसंथथिगुनथगकयागचर्यालाकनं प्रस
 धललप्रीपिंछलधकगथगकपिसंजाह्लादयकल॥ हनंनधंगमलु
 लया॥ १॥ नं च पिंछल हनिष्यपिंछावसकल्यं नगलस
 हिकंमिधकगुनं जाह्ला दयकल॥ १

अथ॥ १॥ नित्तिअनहानविधि॥ गुननहानयायधूनकाउथ
 ३२थमंनय॥ १॥ अयं निवदिनमिष्यसंछुधनिहविष्यमि
 मलुलधममस्यथमिष्यस्यहृजमंवदन्॥ १॥

इ. वि
१२२

अधनक्ति॥ हनिष्यपिंआच्छापिस्सकल्पंमभुलयाआचार्यकलमउ
लसकलसंधललपूपिंजलहनंरुथगगपिनीशवाधिसत्यपिनीशद
वलाकपिनीशधर्मचल लपूपिंजल॥२॥

॥७॥ अधनामभुलाचार
आनांवाधिसत्वानांदवकानांचसंमरु॥२॥

र्यामरुनकुधभाह्वान्॥ व

उग्र
१२२

सत्वामिनि॥ आच्छमिसंस्तवप्राप्तिपिनीककनभनयाविधिर्मया
या नामभुलवाप्यत्वयानानंथधर्मसाधनया॥ ३॥

॥७॥ सत्वानामनूपार्थ
विजयंप्रयत्ननरुया

विधिनामभुलंत्वया॥ लि
कभ्रसाधकाः॥३॥

५.४
१२३

दृष्टानिनि॥ आयथिंयउरूमकयाचांगनहस्पमंउलस्ययाइहाक
दकापापकृताच्छपिंसकल्पंधसंज्ञानसआनेदनचानदयीकल॥४॥

॥५॥ दृष्टाप्रदृष्टापनमं
पार्थोविनिर्मक्ताहवान

नहस्पारूममभुलं॥ सर्वा
धेवस्स्थिर॥४॥

गुन४
१२३

नरुयमि॥ थूगसूरवलास्पंलिपिपुसकमकाथम्बाल॥ संज्ञानया
इरवकृतासंज्ञानसूरवकयाचांगतिर्वाभपदलायधकं सकुणं
चमिमआह्लादयका विष्कार॥५॥

॥५॥ नरुयमभवनेक
स्वाम्॥ तिष्ठकंरुवइरंवरुअभंकरुवसिद्रय॥५॥
क्रियानादस्मान्महास्

इ. वि
१२४

अविद्याहीनि॥ हनिष्यपिंजाच्छमिरुवजसत्वनथागमपिसंश्रुहि
अकवियधं कल आच्छपिसकलंगं न्यायदमृत्पणधनुयानाजा
इयानि अयनं स्वामीइ ल॥ छ॥

॥ ७ ॥ अघाहि विहाय आनसर्वद्वेष्टसवइहिः
अधुनकमहाबाजइ स्वामित्वमिति निश्रयः॥ छ॥

उमृ
१२४

विनागनि॥ हनं अहंका नस्मानपापमलगतं मइस्वरूपधनुसंमइः
अयाकानसं संसावसकामरुगवृद्धायायमरु॥ १॥

॥ ७ ॥ विनागं सृष्टं पापमन्यनादिदिधुधुधु
रुस्मान्कामविनासित्वं नकार्यरुवनापून॥ १॥

इ.वि
१२५

सर्वकामनि॥ हनंदकोकामरागसंनसयानसंसांसांनसपाकजानगस.
रुयी. हनंहमिष्यपिंजमरुसमानरालपंकाकामांसहकृतयाहनंम
नासमययागुप्रभादला यगुब्बुद्धाया॥ ८॥

॥ ७ ॥ सर्वकामापरागे रुममस्वमकभाहयः
पंचमासंमरुंरुंनकात्यःसमयाऽप्यरु॥ ८ ॥

उनु४
१२५

नहिषा॥ हनंथंयुअरिषकलासंलिप्रांतीस्यायंमस्या विनत्ता
रुमस्याहनंहमिष्यपिंज चार्यगुन्याकंनारुमस्यालाडु.
ना साधर्मदकानापाडानि॥ ८॥

॥ ७ ॥ नहिषानिवधःकार्यमिन्नत्वंनपमिन्नरु॥ आचार्यसेन
सस्याद्यःसंवनाइनमिकम॥ ८॥

इति
१२६

नास्ति किं॥ हनं च मिहं मुदीपुत्रववायधककृत्तमात्रचिह्नं हाप्यमश्राध
धकगुनं ज्ञाहादयकल॥१०॥

॥७॥ नास्ति किंचिदकर्तुं
मार्हेषीर्नास्ति न्यायं न

व्यं प्रहापायनचक्रं
आगन्ववायथ॥१०॥

उच्यते
१२६

किं नूतनं॥ थलि किं धयागुखरुताचिह्नं हर्षयानास्त्रवपदमाक
पदलायधकवक्रसत्त्वमथगन्पिनीगमवायानाआकमिहं संस्र
वसप्राप्तिपिंरुसुखकथक धकवक्रसत्त्वयागुहानकयासंसा
नउधनयाधकगुनं आहादयकल॥११॥

किं नूतनं मतः प्रत्तदवज्ञं स्वसमयमक्रयभोरवदं रुजधं॥
कगकिलपुसुखवक्रसत्त्वप्रतिस्मत्तत्त्वनांगनाखक॥११॥

॥ उग्रमय ॥

अपि च धर्मनेष्य यथा हि विह्वलः प्रियपुत्रवत्सन्नेर्मनाहिकल्या
 त्तयेव सर्ववद्रवाधिसत्वेः समन्ताक्रियतः ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥
 निष्पिंसकलंगुनया लिङ्गाय ज्ञानकामं तु
 ललायकमडलुयक मूलन्ययाय ॥ गीत ॥ निजं तु व
 नाग ॥ १ ॥ भक्त ॥ मौलीकूटलविश्ववज्रकलिंगपिं ॥ भक्तकामनं
 नेनात्मापविबकुभाहमदिगं चिह्नं ॥ लक्ष्मिप्रभुः ॥ मूलकाम ॥

उग्र
१३

वीनदेवकनयाक्रान्ताचतुर्मानकाः सुमधुलचक्रनायकमहाह्व
 जनार्थं नमः ॥ १ ॥ निष्पिंसकलंगुनयाय ज्ञानकामं तु
 निष्पिंसकलंगुनयाय ज्ञानकामं तु
 चान ॥ निष्पिंसक
 रवकन ॥

भक्तधनकागुनयाय ज्ञानकामं तु
 लक्ष्मिप्रभुः ॥ सिद्धलय ॥

इवि
१२८

अथ नि॥ हृणुग्रहनाथ आउच्छलपालया कृपान किपिंस्तकलंजुन
कयायासाहलकलस्वानाचानायासाहलकल आउवृद्धकल मज
नमकयाथंनतानंरुथग नीपनीकायमचापिंद्रलधकाग
नूयाकप्रार्थनायाना १२॥

॥ नि॥ अथमसहलंजुन सहलंजीविनंचम॥ अथवृद्धक
लजानवृद्धासिंहाप्रमं॥ १२॥ दक्षपतिनय॥ दक्षभया
॥ रवकन॥

गुनु४
१२८

नमगुनवनि॥ हनिष्यपिं आच्छमिंशीवकयादक्षहिष्यकलायध
नकलगुनयामदक्षभविष्यगुननरुथगगपिंसंज्राहादयकामगुव
किंकन॥ नानाप्रकाशया निसावियमालकमुवियमालवि
मसंथउासनीर्नापंवि यमाल॥ १३॥

॥ गु॥ नमगुनवदयाकथगगतिदक्षि॥ नानालंकाव
वमुदिस्वगनीर्विगषक॥ १३॥

इवि

१२८

नामकि॥ हनंरुबुम्भुमचारुनाधस्मरुवियमाल॥ आभार्किं॥ सल
किहि॥ लासा॥ रुगम॥ खाना॥ धनडव॥ ल॥ उह॥ नानावत्॥ नथवीही
वियमाल॥ १४॥

॥ ७ ॥ नामकुम्भुमिपू अंचदामीदासकथापर्व॥ ह
ल्लुगधनधन्यादिकांचनंमनिमवच॥ १४॥

उमः
१२८

सम्पत्ति॥ हनंसाभ॥ चरुपा॥ विविलि॥ मिऊपाइकं॥ पाउसकनासंय
क्यानाग्न्यामविद्यमूलथूलिउपाग्न्यामदक॥ भविष्यगं॥ म
इहनिष्यपिंधकसृग् नृमंआह्लादयकल॥ १५॥

सम्पक्कममहिषागृहा दिक्कंवनरुआदिमप्यामन
आत्मानंचनिवदयन्॥ किमपमंनिष्यसुदयग्न॥ १५॥ इहा
आनाडीकल्याग्न्यथकेलिनमंउलथिलसकसनकिग्वमन

इवि
१३०

शुभिसमाकृतक्रमापनजगन्निर्वाहवियसगननय॥ कलालिधकमा
जसंविथ॥ चितपूजा॥ नकादकः॥ दण्डमय॥ मालियहम॥ मि
ष्यपिच्छय॥ बाहिकक
लानगन॥ गीत॥ हागहन
मयाचक्रा॥ विसर्जन॥ मधुलग
नकलम॥ धयमद्र॥ समाधिवलिदिगवलि॥ धये॥ संहार॥ गी
नक्रयं॥ धउगधपिलकाय॥ मिष्यसुडान॥ गीत॥ काठुल

उनुः
१३०

वंत॥ गुननप्याय॥ कल्याणमनकिनं वयनीखायदकाडानक
मिष्यक्रुडा॥ संपमलच्छवाकउसंपिहडान॥ गुनजगमसचा
न॥ मिष्यसंगनविय
दक्षपुनय॥ गनचक्रा॥ गीत॥ हाग
न॥ वलिच्छय॥ कलंक
च्छय॥ ॥ कृदिदमहिषकदि
क्राविक्षनविधिः॥ ॥ सकिषनमासाक्रुडिजालनपूसाकलमनस्य
स्थापनायाय॥ लिचायगुनमंलदनपंचगवविय॥ सिद्धनयपंचा

इति
१३९

कमपूजाप्रतिपादपूजाकर्जलसाधन॥ आदियाहयन॥ मंडलधिस
मालज्ञाय॥ नमस्कान॥ नागमाला॥ विष्णुसमानुहजोदिमांसाङ्गीर्त
कालनमाकापूजायाय॥ पूरुभलियाहक॥ कमानीपूजा
निष्पादिवाहनमंडलधि लपूरुभलियाहक॥ कमानीपूजा
नसंयनयचिकपूजादकभविगुसमयच्छयकमानीपूजाच्छयवा
हिलहियसमयाचक्रमवाहिकिविस्तर्जनकल्पधोयमइसंहनकल

उन्
१३९

गलजाज्ञायचूर्णविषयप्रमहांजनकलमयाहजानकयाउमान
क॥ गनचक्रधूर्मागभनी॥ ॥ धूमिइविभयापूरुविधिः॥ सुनिषुन
यहचूर्णियाय॥
अंनमः श्रीवज्रवावाञ्ज॥ ॥ ॥ धनसिंदूवाहियकठविधि
माह॥ निर्मानकलम॥ धनकलम॥ सिद्धापाण्मधमस्यसिंद
नपूजाकालनस्थपनायासं अहियकविमाकास्थपनायाय

हिमा
१३२

मायायाकम्भपनायायधनकाडी० वायगुनमः३३ लपंचगव्यः॥
 धन॥ सिद्धनयसलारुहः॥ मन्त्र वायविधिः॥ स्वावांसंपूजा.
 पंचभालिपूजा॥ घट्ट्या गिनीपूजा॥ कंभपादकथ॥ अष्ट
 भूतनन्दवलिद्विध मंडलकथमपकथसिधकथप.
 निपादपूजा॥ माहनिहाधन॥ आगंवापूजा आदिकायमंडल
 थिललंखवलिच्छयः० नापूजासमाधिवज्जवावाहिदुगयायक

उत्तर
१३२

ल॥ गवनमन्त्राधिपूजादवपूजा मंडलपूजाचाक्रपूजा गुत्यसमा
 धिसहस्रकृतकलंकच्छयमूलाचार्यमायानिष्कसतमूडापूजा.
 यायपूर्ववर्गपञ्चक १११॥ वीनचर्यासदः॥ मण्डलप्रद
 क्रि॥ दानपाठपूर्व वरुपञ्चक॥ ४१॥ आचार्यप्रववि
 धिसदः॥ ४४॥ निजाचार्यप्रवविधिः॥ मालझाय॥ चूर्णकल
 हियकमनिकापहंमायाआव॥ ॥ कालिनपूजाहजानकंधिहं

संयहभसंगृहीताजंरुतावाकृतायुजावासं॥६॥दजावउपपाइका
 वात्रुपि॥भवाज्रत्रुपि॥भवासंगि॥भवाज्रसंगि॥भवानेवसंगिना॥
 वानामसंगिनावास्वर्ग
 निस्थपयिकव्या॥२॥
 नत्वास्वर्गथगगायनगमध्वनापनाथगव॥४॥धीवजास्तननाम
 हविमरुतासंज्ञानदाधायह॥अष्टवमवद्रुकादममसत्ता

गुः
 १३४

धनमत्त्वक॥नानावर्गकथगगाविचचनादहंनथकथ्यते॥४॥गी
 का॥प्रमादिना॥॥॥क॥नन्नाक्रमपदसंभिनतिक्चरु॥
 सुवकस्कन्दमाखव
 नंभीषमालिन्दमोली
 ननृहन्नागचर्माल्नीय॥पायाकुसुमनाकस्त्रुवनविक्रयीज
 किनीचक्रवर्णि॥५॥थनंलिमिष्यपीकमाकंथथंनयाग्नूमसु

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

लदनकमलपूजाविस्तर्जनहावनालाहपिनकापंचगव्यवियनत्र
मउलवायकगुनयानुदाहलया ॥ हावना ॥ मिष्यंवेनाचनरूपम
वलंबिकंदलकंथमिनसि स्थवडमदियमचक्रन्यस्तुत्य
चडापनिकलसुहृन्मनः जाः गुणकाननस्मिप्रहाप्यनर
श्रीनंविहाव्यः ॥ ठिकायोधिव्यान ॥ पंचगंधनक्तिक ॥ उंज्राहं ॥ पुं
गमांननय ॥ माजानसिधुच्ययसिनवस्तुनय ॥ उंक्काउवृषहं

उग्र
१३५

॥ गवचगवश्चालपा २ पादुसकसंपविय ॥ अन्धप्रकृतचिय ॥ उंचक्र
वेधनवनमानयहं ॥ आपथन ॥ उंमधुनाहं ॥ क्रयक ॥ उंज्राः रंवी
नहं ॥ पमहाजनचसपा लमनय ॥ गमक्रनस्यंइकयनग
ननंरुन ॥ कलंरुसुन रुप्रिय ॥ मिष्यनधायक ॥ हसि
ष्यपिं च पिंरंरंपीवडवानाहियादर्शनयायधकमहावसनव
यावलाधकगुनंज्राहादयकल ॥ ९ ॥ त्रहृगहंमहासुखनि

सद्वर्गमाला॥

॥२॥ हृन्नुहनाथजीवज्जवानाहीयादर्शनयायधकजिपिमहासुख
नडायाखधकमिष्यपिसंगुनयाकप्रार्थनायाम॥३॥ समयला-
नका॥ उां सर्वयागचिरू मत्स्यादयामि॥ माउगरवदांगन
थिय॥ सपूष्याजलिह दिसूनरुसमयम्वहासिद्विदकं
यथासुखमिनिदंडधत्वा॥

उनु४
१३६

अथमि॥ हमिष्यपिंआच्छमिकथथिंक्रवज्जवानाहिंअधिस्थान-
यान्आच्छमिसनवज्जवानाहियागमभुलदर्शनमलापिनकन
मइगुक्रस्यानंधनवि यानेतिस्त्रयानंकनमइधकगुत्र
संआह्लादयकल॥ १॥

॥७॥ अथलंवज्जवानाकधिदिभाहविष्यसि॥ नचत्ययदं
वज्जवानाकःपनमनहस्यमभुलप्रविष्टायवक्तव्यनचयत्रा

॥८॥

पञ्चप्राणमः

सर्वक॥ हृष्यपिंमध्वसुविद्यानाचां क्रवडुठाककथगगनयानपूजाया
नाच्यमिसंजात्माभिमिनंदाहलपल॥ जामध्वसुविद्यानाचां क्रव
डुठाककत्रकमिगुअधिविद्यानयाककपाय॥१॥

ॐ आः स्वाः धिमाहं
कलिकाथइमथन॥५

ॐ आः खंवीनहं॥ हिनक॥ गम
लदथसमाजानसालादथस

मथ॥ ॐ महासुनकसुदसुमाध्यासुखामवडुसुत्वायसिद्धि
मां॥ पचप्रममयाकि॥ म॥ मि॥ ॐ सर्वकथगगनवडुठाकपू

उज्जु.
१३१

हमिष्यपिपूर्वसुविद्यानाचां क्रवडुठाककथगगनयानपूजायानाह
मिसंजात्मास्वनूपंदाहलपज्जापूर्वसुविद्यानाचां क्रवडुठाककथ
गमं चमिगुनक्रायाक
कल॥ २॥ द॥

क २

पूजापस्थनायात्मा
गगनवडुठाअधिमिष्टमां॥१॥ ॐ सर्व० वडुठाकपूजा० सर्व
कथगगनवडुठाकअधिमिष्टमां॥२॥

सिद्धा
१२८

हृत्पिण्डकिंभस्विष्टानाचां नत्तशकनथगनया न आत्मा
भविष्यदहलपापूजाया न आदकिं विष्टानाचां नत्तशक
नथगनं च मि नत्तशक
याक इल ॥ ३ ॥

॥७॥ द ॥ ओं सर्वकथाग नवतशकपूजापस्थानाया
त्मानंतिर्यामि सर्वकथागनवतशकअधिनितमां
॥३॥

७३८

हमिष्यपिंपमिमस्रविष्मनाचांक्रपयडाकरुधगगनयारुपूजा
यानाज्जात्मागविबदाहलपलज्जापमिमस्रविष्मनाचांस्त्रपय
डाकरुधगगनंयुमिम नक्रायाकरुल ॥४॥

गुणः ॥ ॐ सर्वकथग नपञ्चाकपूजापस्थ
नायात्मानं निर्याकयामि सर्वकथग नपञ्चाकञ्जधिमि
दृमां ॥ ४ ॥

सिका
१४०

अथत्वं॥ हनिष्यपिंसकत्वं ग्रीवकवानाहिया कूलसुइहाल
आच्छमिनत्तज्जस्व नूपहानत्तत्सहिया नाविथकल॥ हनिष्यपिंध्र
गहानं ग्रीवकवानाहि यागतिद्रिलायुधमिद्रिलास्यं
लिमकासिद्रिच्छयात् धकागवत्तआहादयकल॥ ७॥

॥ ७ ॥ अथत्वं वज्रवानाहिकूलप्रविष्टसुदहं नवहानमत्पाद
यामि॥ यनहाननत्वं वज्रवानाच्छमिनपिडाप्यासि किमूनाया

उवः
१४०

नचकि॥ हनंहनिष्यपिंध्रनहस्यमउलदर्शनमलापिंतिद्रुतानक
नमइकनधंजिच्छमिनव्यथं कयकाविथकलधकागवत्तआ
हादयकल॥ ८॥

॥ ७ ॥ नचत्वं यदंमदृष्ट मभूलयूनतावक्तव्यमा
नसमयप्यथकि॥ ८॥ निनसखकांगतथिथ॥

अयम् ॥ हनिष्यपिंथथिंक्कसमयवज्ज्मिसनीनसवानाविष्कार
 धरवसूयाकंकनमइकनहाच्चमिमिनचरुयापिहाविष्कारयू
 लधकगनृमंआहाद यकल ॥ ८॥

अयम् ॥ हनिष्यपिंथथिंक्कसमयवज्ज्मिसनीनसवानाविष्कार
 धरवसूयाकंकनमइकनहाच्चमिमिनचरुयापिहाविष्कारयू
 लधकगनृमंआहाद यकल ॥ ८॥

उन्
 १४९

वज्ज्मि ॥ हनं हनिष्यपिंथथिंक्कवज्ज्मिसनीनसवानाविष्कार
 धरवसूयाकंकनमइकनहाच्चमिमिनचरुयापिहाविष्कारयू
 लधकगनृमंआहाद यकल ॥ ८॥

॥ ८॥ वज्ज्मिसनीनसवानाविष्कार
 धरवसूयाकंकनमइकनहाच्चमिमिनचरुयापिहाविष्कारयू
 लधकगनृमंआहाद यकल ॥ ८॥

॥काषपान॥

धृष्टं नमि॥ हनिष्यपिंश्रमच्छमिच्छुसुमयाशुभुक्तननकयावच्छु
 धकच्छमिभनीमसदाहृजयुगधुमकुमडाधंगुसमयसिद्धिलाय
 उधकाहापानधकगुनं आह्लादयकल॥११॥

काषपानश्रुतय॥७॥ धृष्टनाविकंवागिसमया
 निक्रमादहन्॥ समयंनक्रभस्तिद्रिपिवजाम्नादकं॥३॥
 ममादकं००हं॥११॥ धानक॥

उनुः
१४२

अथत्यमि॥ हनिष्यपिंश्रमच्छमिच्छुसुमयाशुभुक्तननकयावच्छु
 चमिसंयायमालहनंजीधयाथमयासाजिंछमिभविषंदाहया
 नाथंदाहयानाननक सकृदिकच्छुधकगुनंआह्लादयकल॥१२॥
 ७॥ अथत्यप्रहृतिरु बाह्वजपाभिर्यदहन्ब्रूया
 दिमंकनूगम्ययाकर्तव्यं॥ नचत्ययाहमवकथाविषमापयि
 हानमकालक्रियांकृत्याननकपटनस्याह्॥१२॥

सिद्ध

१४३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मिथ्याथिथिमथियकं नय ॥ आव ॥
 नय ॥ आवता ॥ नमः स्थि नचिरु वडयागमालम् ॥ नद नमिष्यम
 टिकिसुत्यमानं नमः ॥ काननमिनाह नूपं निष्याद्य सर्व
 नथगना अधिनिष्ठानां वडसुखम आव ॥ त्विनिवाच
 यित्वा निनसि वंरु वकुल वरु संकवानु समुलात्पनिचद्रुल
 हं कानं का ॥ यं कानन ऊचल लयना कादया कधन्वा हनीलानीलम

गुन ४
१४३

॥ आवतलवता ॥

उलेचन नृणां कानं विहाय स्वहृद्वाज नमिहि निरुकायवा
 गजानानीय यथक्रम नत्वरु वयं हं हः ॥ आवः कानं च नरुकायपा
 ददया नधत्ता वायु मधु लादपि नमं पविन नमरुकाय
 नदिका हस्त नलि नत्ता नलस्य नचमः कानन लिकिप्यमा
 नं मिष्यमः कानन मभि समूहः पाद सुविनय विष्टः हं कानादि न
 मिहि निपूर्यमाना समस्त नमी नधाय न ॥ ॥ इह उत नरुकाय

॥ मङ्गलेश्वरद्वितीय ॥

६२
काय ॥ मूलउपाध्यानि कसन धूपदह जाना मङ्गल ॥ १३॥ जापया-
सं पिहायायाया ॥ १४॥ संपिष्यपिंरुथन ॥ कउनजालिंगनम
जानेचासंभेकानेच
लउक ॥ गमथा ॥ १५॥ यंमङ्गलसम्यकमयापिष्यप्र-
वसिनयथापुंरुथवेवास्तुदवकानांकूलक्रमाने ॥ यादकसि-
द्धिरुवदस्यागंयसिंभ्रहाजनं ॥ यादकपुंरुथवेवास्तुमाह

उवः
१४४

पुष्पपाठनः ॥

गस्याम्मुमङ्गल ॥ १६॥ किरांधपटनमिष्यप्रवसविधिः ॥ नमःपूर्व
हीनमालायास्तुंकात्रमंदिनायाअज्ञानलघूप्रव्यमकृष्यनल्क
नपूटदयारु ॥ पुष्पपा
हाथजाजलपेरुय ॥ १७॥ टनयाक ॥ १८॥ आहवादासांजानका
हवहदयमधिष्टिरुसर्वसिद्धिमप्रयच्छं हहहा ॥ आरंवीवहं
प्रकिच्छकसमांजलीनाथहा ॥ १९॥ कदनमिष्यद्वचवाधिपकिलला

॥महलयारवकः॥

मलरुतयदयसकालां वयं विहायः ॥ अथ पटतका काय ॥ ॐ
ह्रातकृहं अ० स्वाहा ॥ प० नमं धपट अयतयकृहवकं पस्य ॥ द
वताचकी ॥ महलयारवकः ॥ कायाक ॥ दकृतादं २ च्छयक
॥ महलयारवकः ॥ पूर्ववत् ॥

उग्र
१४५

ॐ नमो श्रीवक्रवानाश्रु ॥ ॥ अथ नमः पूर्ववत् ॥ नदस्य न पूजा
दविष्ठा ॥ १५ ॥ नदस्य नमः ॥ षट्कालमक्रमय ॥ पूर्वकालवक्रवा
नाहिदवीक्षितः ॥ नक्त
षट्वाङ्गः कर्त्तुं पादः ॥ वस्तु ॥ त्रिमूर्तिः पंचमूर्तिभूषण
दिगं म्वनमूककं ॥ नदवपद ॥ १४ ॥ अथ ॥ यामिनीदवीनीलवस्तु
॥ एकमूर्तिः क्षितः मूककं चतुर्भुजः कर्त्तुं कपालः ॥ १५ ॥ अथ ॥

हा. यो. का.

सिद्धा
१४६

धना. कान्दवपद. पचमूडा विरुषिना ॥ **वायव** ॥ माहिती देवी. श्वेतव
र्षु. सम ॥ **पश्चिम** ॥ संचानिती. पीतवर्षु. सम ॥ **वेजस्य** ॥ संचासिना दे
वी. श्वेतवर्षु. सम ॥ **अग्ने** ॥ फट् फट् चालिका धूपवर्षु. सम
॥ **वकावली** ॥ चतुर्दल ॥ **पूर्वदल** ॥ शक्तिनी. नीलवर्षु.
प्रयाली. चतुर्दल. कर्किकपाल. उम. नख. वांगमूडा. कदिगम्वन
विन. पचमूडा भूषण ॥ **उत्तर** ॥ नामा देवी. श्वेतवर्षु. सम ॥ **पश्चिम**

उमः
१४६

कका. सिद्धा. तका. सिद्धा. मदि. वि. कका. व.

म ॥ **पश्चिम** ॥ नाहान. नख. वर्षु. सम ॥ **दक्षिण** ॥ नूपिनि. पीतवर्षु. सम ॥ **नदस्य**
कम ॥ निर्मा. श्वेत. नख. धर्मा. दया. का. न. विदल. कमल. उं. ज्ञा. हं. का. य
वा. कचि. रूप. नि. ह. न. ॥ **नम** ॥ **अधी** ॥ वज्र. वा. ना. ही. देवी. न. नख. वर्षु. सम
क. मू. ख. वि. न. उ. द. कि. ॥ १ ॥ **काला** ॥ मू. ख. कान्द. व. प. द. मू. न. क.
न. दि. ग. म्व. ना. वि. न. उ. द. कि. ॥ **वाम** ॥ क. पाल. ख. वांग. ध. ना. श्वेत. मू.
डा. रूप. श्वेत. मू. माला. क. न. व्या. प्र. चर्म. क. वि. वि. न. क. मू. न. व. न. क. मू. न. प.

हिफ्ता
१४८

भिन्नमि हसिष्यपिचमिसंत्वाच ॥ ६॥ कायाएषीवद्वानाहि
 वासिनेलानसामहामुद्रासिद्रिलायुः हनेमिवातलानसामुद्रासि
 द्रिलायुः नगलसलान ॥ ७॥ साउरुमसिद्रिलायुः वासंथला
 नसामध्यमसिद्रिलायु ॥ ८॥

नारसहिमहगवकिंहावथन॥ ॥ ह्वानरुकायारवकन॥ ७॥
निमसिउष्टीषवापूष्यपनकिमहामूडासिद्धि॥ लाचनमखवा

७५४
१४१

हनेवाकं कालाम्भारुडधनं मषुचिदिधनं मषुगुसिद्धिलायुचाकनं
पिनलाम्भारुसफललायु देवक्रुडनलाम्भारुकिऊकसिद्धि
लाम्भारुदेवनापिनगुकाथ
आत्मदेवनायागुसिद्धि१

मरुतिद्रिः उरूमांगउरूतिद्रिः॥ मध्यमांगमध्यमतिद्रिः॥१॥
अधःमांगत्वधनंतिद्रिः॥ विम्वस्याकिद्रुचिनात्समीद्रिप्रतिद्रिः

श्रुता
१४८

हनंस्वानच्छयाउथंपिनलानसाखपाकच्छयापाकच्छयानंपिनलान
साकनमांशंसिद्धिलायुःहनंचाकनंपिनवक्रमापवामियावाथूलिया

दवमानांकुक्रियस्थानर

काष्टादिविच्छेदनाह्वानव्यं

वयादवमानलपनय

दिपनकिनत्कलंगस्पहव

मि॥ पंचमरवावहिपाकपुनःक्रिपद्वानुयंयावत॥ कश्चवहिः
पाकक्रिप्रसिद्धि॥ वाक्कवर्तुमरवाह्वाक्कवजावेलिवहिःप्रतो

उनु४
१४८

पिनलानसासिद्धिदयमपुःमलुलदुर्गमिजकवियाकनमांशमरु
हकिननापिनच्छयकलच्छमिधर्मलुलच्छमिसंछयागुमानधी
वज्जवावाहियागिनह
यकागपशुलधधकगुन
लानआउच्छमिगअहिधकवि
मआहादयकल॥ २॥

क्रिप्तिदि॥ मलुलचास्पदर्शयन्॥ किचित्मलुमाजकलुक्कथ
थयित्वावहिप्रवमनीयं॥ २॥

सिद्ध
१५०

हृणुहनाथमहाकधंगुवक्रमभुलमइहाडानिधूनहनेमहाकधंगु
यागमभुलयादर्शनजिमिसंलायधूनहनेहृणुहनाथकधंगु
क्रमभुलयादर्शनजिमिसंलायधूनहाहाजिमिकधंगुहा
गकलधकभिष्यपिहं गुन्याकप्रार्थनायान॥१॥

भिष्यस्वपालधायक॥ वक्रमभुलंमहामभुलंप्रनिशाहं॥ यागम
भुलंमहामभुलंदर्भिकाहं॥ उक्रमभुलं०दिक्किनाहं॥ हा३॥ १॥

गुन४
१५०

अथप्रश्नः॥

गुनगधडा२गुस्वानकयावियंदं२काय॥ भिष्यपत्रिकमनय
लचायाडाआगंखदिलास्पंकय॥ मभुलचायस्वानकगदुवा
यकपूजा॥ अरध्वष ॥ अहिषकदान॥ नि॥ वाधि
वजनवृद्धानांयथादक्ष महामह॥ ममापिज्ञाननार्थायख
वजाघंददाहिम॥ १॥ हृणुहनाथवाधिवज्रकथगकपिंकग-
॥ अहिष्यकविलखवज्रआदिंवियाथंकिपिंनकायायकानसं

सिद्धा
१५९

वज्रवानाहियागजहृष्यकवियाविद्या रुधकगुन्याकवि
 क्रियाना॥१॥ मभुलविमर्जन॥ ह्यानरुस्यहावना॥ रुकःमिष
 वज्रधनंविहायः नि नोजनलाहाग्निनका॥ हनंरा
 वना॥ रुदनरुहीकम युरवेमनकदिचर्त्तिनस्तथ
 गकानविद्यादवीचसंपूकशिष्याहिषकार्थ॥ जूरधम॥

गुप्तः
१५९

वृद्धानामिनि॥ ह्यगुहनाथजगत्संज्ञाननकायायकाननंगुत्तक
 नरुथगकनगथजहृष्यकविलविद्यानअथंकिमिगवज्रवाना
 हियाकल्लमहिषक पाशहृषकविष्पविद्यारुधक
 गुन्याकप्रार्थनाया क॥२॥

मि॥ वृद्धानामहिषकंलुजगंज्ञातयवज्जि॥ गुत्तकवाय
 थदरुत्तथददधमस्याहि॥२॥

कृतिमहिषकः॥

धानाकलमसिनस्तद्विचकं नयगमथ॥ मेरुधगर्भः प्रह्लासमाना
महानागसद्वीह्यवेनाचनवान्नानं ननिवन्धवकुमारगमति
गस्पृष्टवदेवामखनप्र वसिक्तं सिष्यमटिनि सून्यकानं
कनं हं वज्रजाकसप्र ह्यक्रायव्युपिनं स्वहावं श्रीवज्र
वानाहि नूपं हानस्तत्वाहि नं महिषि च पुनर्तुजमूखादिमूर्ति
हिः पप्रानि मरुगगसमापूर्यस्थिः लाचनादिविद्यासहिर्गर्भ

उज्ज
१५२

उदकाहिषकः॥

यधजपनावमुदिगीकनस्पृष्टपूष्यरूपादिहविहिः कनकिम
लयावर्जिकवाधिविह्वलमपूरुमीककलमेकं सिष्यपप्रानि
नं अहिषिंचमानं नू पवजादिदवीरिह्यत्सङ्कलंगीकं
महि नूपनीयमानं या गितीमङ्गलगीकं॥ अहिषक
विष्य॥ उं वज्रसूखस्तत्वाहिषकनत्वामहिषिंचोमि सर्वरुथगगा
धिपकित्वनदशमरुव॥॥ पप्रहाजनसिष्ययासिनस्तद्विचकं नय

١٤٥

७५४
१५३

धकलालिनिहूं २५८॥ ॐ नमो संज्ञासनीमाननी च्छदनीसुप्रहदनी
 पनाऊयहूं २५८॥ ॐ नमो पनाऊयऊं हनिहूं हनिमाहनीहूं २५८॥ ॐ
 नमो वज्रवनाहिमहा यागिनीकामस्वनीखलहूं २५८॥
 ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥
 ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥
 ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥
 ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥ ॐ ॥ अ० अ० १० हूं २५८॥

सिक्का
९५४

अहिष ॥ हनिष्यपिंश्च अहिषकशयूगधिं गधसासागधउसविष्वा
नाचां पिंदवलाकपिं सनमस्का नयानानयागुदका मथगमपिं स
वियाडांग सागगुष्का ॥ याऊसउसहिस्त्रयाचांग अहिष
कधकगनं आह्लाद यकल ॥ २ ॥

॥ ७ ॥ अहिषकं महावज्रं उधउकनमस्का नं ॥ ददामि सर्वव
द्रानां पिंश्च कलयं हव ॥ २ ॥ कलमं गंधादकनहाय ॥ ३ ॥

उमर
९५४

॥ पुष्पमंजुलि ॥

आ४ वज्रमन्त्राहिषि करं ॥ सिक्काय ॥ मिक्कायावाहललमनय
माहनि कंजलउयकं पुष्पमंजुलिथिक ॥ मूलं वागमकारागमक
सुषका उकमूरवआदिं नयक ॥ धामासनचायाथपं
किनयलंखवलिविथ दगुलि ॥ कनिउमसुपाकाधूप
दहकठचापमहांजनउमनधरुथपनप ॥ अपिं गव ३ रवाऊद
कहपधोअमथकपधनकाउमिष्यपिं न पूजाहथियकक

सिद्धा
१५५

लंगुनप्रभकालियाय ॥ गीतमध्यममूर्पमिज्जमनंचचाप्रअह
लंगुनमधुलसिद्धमयआदिकाय ॥ मधुलथिललंखलिच्छथ
वज्रवानाहिदगुयाय ॥ कजपयाथवलसजायझाय
वलिविय ॥ सगंमन ॥ अपिंपूजादिवयूजागीत ॥ दि
कुं ॥ सिधपिहंनयलंनजययाय ॥ पिअदिपूजा ॥ मधुल
थिल ॥ किमनहकहन ॥ सुगिननाऊनमधुलथिलविसर्जनस

उनुः
१५५

॥ पक्षमयविय ॥

मंमाहनिच्छय ॥ चरपूजागुनप्रमूरंस्तकसंखानसिद्धनिक
मूलयादक्रभमाकादशलिस्मयविसर्जनवल्लभयमइ ॥ स
यपूजा ॥ गीत ॥ दिउ ॥ ऊकमूरव ॥ खाऊचपालहि
या ॥ गीत ॥ जिहंअ ॥ पाऊसचांगविपनथियक ॥ घ
स्तमयविय ॥ ॥ भकयाखकन ॥

शिक्षा
१५८

उद्याना॥ हनिष्यपिंथुः कपनमन्वनवज्जवानाहीरयुगधिंक्रधा
स्तानिर्मातचक्रयाक्कवायूवगतं कं पमानरुथकं उत्पल्लिङ्गया
विष्काङ्कगथधाम्नास्व र्गमसपर्यसाभाधंरुजप्रकास
क्रयाविष्काङ्कमज्जद काह्नाकाविष्काङ्कहतंसागला

७॥ उद्यानादलचक्रमातिनधूनाविद्युच्छकारास्वमा
दग्धमिदिकयादिलाकमहिनापीयूषधामासूमा॥

उनुः
१५८

कसंनक्रायानाविष्काङ्कमृत्कधानाहाथकाविष्काङ्कमथगन
याह्नातमनसुयास्मविष्काङ्कबलुगपापदुक्काविष्काङ्कहतंआ
नन्दसहिर्नक्रयाहावज हावविचायानासंसावहीनयाना
विष्काङ्कथथिंक्रवज वानाहिंच्छमिर्नक्रयाकश्ल

पूज्जहातनसाविलाविकलषास्वानन्दसन्दाहदाहावाहाव
विचानमविनहिमावानाहिकापाउवः॥१॥

सि. ३
१५

निर्माणा॥ हनं हसिष्यपिंश्ववज्जवानाहिगथिंश्वधासानीमानवक्र
याकंउत्पत्तिरुगुसूर्यमलसविष्मताचांश॥ हनंककानादिज
कनंउयकंविष्मताक
कामशयाअमनसक
वलज्जगिथंजाजाल्यमानकजप
याविष्मता॥ हनंपलखांषादनं

॥७॥ निर्माणाविदिनसमंदलगनाकायादिवर्तुहनाप्राक्षा
लाहलनलामनवाभूक्षमाकुसुमापमा॥

उत्तः
१५

पिहाउगसुकाथंस्निनरुयाविष्मताकथगमयागविष्मता
नंस्वणचक्रसंहदयानाविष्मताकजानदनसहिकयानासंज्ञानस
प्रकाशशयाजाकाश
वज्जवानाहिंचमिचि
सधहाउनाविष्मताकथथिंश्व
रुसउत्पत्तिरुवक्रपाय॥२॥

विष्मावृद्धकदंबकदहमियाचक्रउयाहदिनीसानदाल
लिमाईगभरुनमावानाहिकाचमहि॥२॥

सिद्धा
१५८

ॐ चालिकनलीलयानिकपदाइधालिकविषह॥
विषंरुमिमहासुरविनचयंलीनंस्वधदया॥

उत्तर
१५८

अम्हाजायमापिनिर्गुह्यपदं प्राप्ताविधम्ययावागभडा
गच्छन्मदयंचसहजानंदायवंदामह॥३॥

सिद्धा
१५८

वाकामिनि॥ हनं हनिष्यपिंवावाहिधकाचूयाकानमंधलवाध
याआखलंबचनह्नायननाधयागुआखलंबागदूकयाक॥
हीकानधयागुआव लंघुम्यकूयाडानयाकश्चसाग
आखलंबावाहीधक नामयाकधंकगुनंआहादयकल

॥ वाकानावाकथानीमनाकानागावर्जिन॥ हीकानम
हनुनंवावाहीसाप्रकिर्दिना॥ ४॥

उन्म
१५८

॥ पात्रसंज्ञा ॥

थनलिपात्रसंज्ञाजन॥ धनकाडाविसर्जन सनाकव॥ क्रमा
पनथडाखलिधयमूलाचार्यनंखधंगनंसकस्यां॥ शिजस
धिय॥ स्वानमूडाम उकमाय॥ स्वानमालादकाव
लिगनय॥ पंचधर हायकपिंश्र ४ मउकमायम
कडा॥

सिद्धा
१६०

७३
एकलुनि॥ हनिष्वापिं वज्रसुखनथगं नञ्जालदयका विष्काग
गुनधयाक्तः गधिंक्तधसाममि नूपीधकी प्रियाकाः धर्मधया
गगधिं गधसादागम स्वूपधक सियाकाधकगुन०

॥ ७ ॥ गुनकलुधमा विद्याननोकाधर्मप्रकाशि
न॥ संसावपानगं हनां वज्रसुखनद निरं ॥ ७ ॥

७३
१६०

कलुधनमि॥ हनिष्वापिं माजिमदयकं दशगभऊकदयादुयाय
हनां पानयानावियुज्ज ॥ थं धर्मऊकदयादुयाय विनागुन
याउपदधमदयकं ज ॥ थं ॥ थं संसावपानयाइः खयासुदं
पानथयुक्तगुनवि नामवसंमइधक सियाका ॥ ७ ॥

७ ॥ कलुधनं विना नोकापानं प्राप्नुमातहि ॥ ७ ॥ सर्वेऽपि
पूहुमपि नागुन हवपानगः ॥ ७ ॥

सिक्का
१६९

थनंलिभिनाक्रुतिमहविधिः थंथमकप॥ पूजाहसंकल्पयायप
त्रिक्रमेनपूजायानाहय॥ गीत॥ म१ध्वमप्रतिमं॥ गनमंडल॥
आदिसमय॥ मनुल थिल॥ समाधिकलपूजा॥
अप्रिस्थपन॥ माम किपूजादेवपूजा॥ आक्रुति॥
गीत॥ कूलिकवजानल॥ वेधनपूजा॥ पंचयागिनिवलिविय
॥ मांसाक्रुति॥ पंचधनाहायक॥ गीत॥ कालाब्द॥ वेधनप

गन४
१६९

इय॥ गीत॥ सर्ववृद्ध॥ पूर्णइय॥ पंचभा॥ ललहिय॥ मूलनृच॥
गीत॥ हाकारुन॥ ॥ लक॥ चलालिकपञ्जाक॥ ५५८ क्रापां
गड॥ द॥ पञ्चकयपत्रि क्रमतंभलियहन॥ कसामिप्र
जा॥ सिध्याधिवामन सिध्याहृमिदुलाहियक॥ म
गुलथिलकिगनजुति॥ गवचगालइयघनपूर्णा॥ होममका
आतिर्वाद॥ मनुलीवेसर्जन॥ सगंनयचिगपूजादक्रुति॥ कका

सिद्धा
१६२

५५
क्रा॥ वाधं निमलादगुह्यमयञ्जकसूक्तयकमानिपूजामसुलस
मायदगुलिहमचकाय॥ कमानियागुह्याकायमाहनिकायवा
हिलहिय॥ गीत॥ च क्रिकसुल॥ समयचक्र॥ मषा
क्रिकविहर्जनक्रमाप नसंहानपंचधनायाथागिति
पिंगुस्वानममुकहामवल्लिभक्तय॥ ॥ शुभ्रनृम्यायनभक्तप
ह्यमात्राप्रवसयाधमृत्किंयानवयजानकंगुवभय॥ गीत॥ दं

शुभ्र
१६२

विनी॥ चलंपकिंदिगस्वयाइहउान॥ नागकाय॥ ॥ मक॥ सं
पूम्नसर्वज्जमनायथपदंसर्वननात्तदितपित्वासर्वविकल्प
माहगवलंजकिनीह नूकादिना॥ यश्चक्रपनिवर्त्त
नक्तिनगुमहनादयं भाद्रपदंयस्यानस्पृहापुन
हस्यमनसान्द्रसुहृत्प्रयसं॥ क्रजयाञ्जुमसंचानमनाक्र
नमूजाविहर्जन॥ मूजाकाक॥ गीत॥ सादमहाय॥ मात्रायाग

सिद्धा

१६३

स्नानकाकायाव॥ बलिस्तनसंखायकलच्छय॥ उन्नतमय॥ मि
 ष्यपितं॥ उन्नयानसंगेवविय॥ दशपञ्चनय॥ गतचक्र॥ गीत॥ हा
 वन॥ धूमांभात्रि॥ मू खगुद्रिदानगमथा॥ ॥ वृत्तिर्हि
 इनाहिषकविधिः

उन्नः
१६३

वेष्मनलस्यसंहयज्जदलस्तनय स्नानसंखावता स्नानवस्त्रा
 सर्वधर्मास्नानवस्त्राहंउन्नयानवज्जस्तनवपत्रमस्तनमयनिःस्व
 हावंपत्रमस्तनवस्त्राहंउन्नयानवज्जस्तनवपत्रमस्तनमयनिःस्व
 त्रीलंविनय उन्नयानवज्जस्तनवपत्रमस्तनमयनिःस्व
 वनस्त्रपुंस्तनवस्त्राहंउन्नयानवज्जस्तनवपत्रमस्तनमयनिःस्व
 स्नानसंखावता स्नानवस्त्राहंउन्नयानवज्जस्तनवपत्रमस्तनमयनिःस्व

शुवि
१६४

अऊनउयक मरु अऊनतस्यदि० ७४अऊनहारिषकः धनप्रभ
पनीविय काउजइउम अंचकवध्वरमानमानहं पंचमलिनक
७४अऊननारिकंवायिसम यानिकमादहक समयंनऊना
सिद्धिपिवकाममादकं० ०हं सिद्धनअइवास्वानमा
लाकंरुस्य२१हिन खाऊपचाकमलास्यक कलंहासूनगधि
य कनापिवक्तव्य ७४अहंमहासूरवति पाउमिनसूनय अ

अनूर
१६४

हिषकस्यदि० यथाहि० विधान मांक वडाविय अनादिनीध
नंसत्ववडासत्वमहानकः समकरुदसर्वात्मावडागर्हपतिपतिः
७४मिवकाहिषक यलवि य गृहमासिमयाहवनम
यिसंनिहिगारुवः ७४स्य यलविषकः चक्रंवस्यसक
जंदत्वाताभवदस्वम चक्रदवनयान्त्वआचार्यस्पपनिक्रमच
समयवप्रनाथानासुवनंगकनरूम आचार्यस्याम्पहनाथस

हल

बालवन्द्य

गकलमाह्वन ६४

किलह्वन १०

पचदशपानाम् ११

कर्पुपाका

दोल-चषप-चषषिप

दिशुमाको

पूर्याजोब २

आर्किक

होवि

वद्रुगलिध्वं

नरुषाषधिसर्वाध्वि

पचपक्रवान्

केडागु-मिमावसा

दको

सकिकनादको

बाल-पक्ष-वा

नाराज-नका

प्रीतहाज-नका

वेदुना

मुद्याखेमधंखे

विहिता

इमानातपनेभुडान

यवसाव-चाक्रमवि

थाकलियादयकेवि

विः

यद्र-दीर्घ-संख

कशकोएटक

सुलमिहि-अर्धार्धपा

त्रगा ३

कोपलापा १

अर्धजुत्ति १२

लुचोकिता १२

शारचोकिनस ६

धर्मादयाल-सोपि ६४

पाव

वरुसुनाप १

सलाकाप १

गन्यावम्पुह १

माशायावम्पुह १

नकाप १

होना ६

लाजने ३

धर्माधिकासिधाद

यकेगुजल

क्रतिदयेके

पाह

उमन्महापाह

मिसलाफुजला

कसागाभन्म

महागुधि

दाशिला २१

पोम्-लोचिपुनाभी

पुः

ननकाहना

अडवा

पेलावाकाप

पोलकजिमाउड

नययवा

दिक्कविधानयादकेविधि

गभकलशाव ३२
 दर्शकलशाव ५
 नागपव ३
 मिह्रापव ६४
 नपासलापान २
 बिहिसलापान ३६
 बलिभेवपान ४
 शाभेखापान २
 मालिजोल २
 दाडव २
 दयानेव २
 गुजव २
 देखापान २
 कुधभलाव २
 मरुत्तपाकामाको २
 धूपदहमाको २
 कशुवाभाको २
 शलिभेवअप २
 पंचदत्तपो १०
 तुपनेवरयेले ८
 योमूमाको १०
 दिमिजो १०
 जिविजुजाअंभा १०
 अर्धजुजतिचकि १२
 कशकएटकाव १
 प्रभविषयानवसुजान १
 माकि १
 कश्चागापूक्कलशागा १
 पू नक्याव १

ककसु १
 भासलकी १
 लाज १
 गययवाभाको १
 पसुका १
 झाडकागुकि १
 लाकागादा १
 इनाजमका १
 अजुइना १
 पंचवर्गकाप १
 दिग-अडवाल १
 कयलेपान २
 चकोयलेपान २
 मूलपान २
 पुग-मिद्रवृमि २
 ककालकाभाको २
 पुगवगत २
 झाडलाकाअडवा २
 दकापकाकयमि २
 लाभाको २
 यो-कलि-माड २
 ड-पंचपताभाका २
 अंगलमिह-बाहा २
 लादंढकाव २
 पंचयस्त्रव २
 कसरावापा २
 प्रशव २
 कुशदिपोरा २
 पूरणाजो २
 भासकि २

अभिषेकविधेय

कलशा १
 पात्र १
 उकुट १
 पदा १
 वज १
 दाढ १
 नामपसुगाभ १
 भंजनाभिषेक १
 दर्पणाभिषेक १
 सरक्षेप १
 एलाभिषेक १
 कषोपयवसु १
 पुस्तक १
 शरव १
 नथागनीचंर १
 छिमिरिका १
 रवि १
 भस्म १
 सप्तपोदक १
 पदनशालि १
 कोषपान १
 मूजामूल-कोयल १
 छत्र-कुश-शि १
 झाडका-अतका १
 ददकाव १

आशा सरकाथि

2.626

ASHA ARCHIVES



